अक्तूबर (द्वितीय) 2020 | ₹ 30.00

चंपक

VISIT…

LANZAROTE
Caliente.com

DELHI PRESS

HAPPIER CHILDHOODS GUARANTEED

If you are looking for magazines that will help spark the imagination of your child, look no further! Dedicated to broadening the horizons of children aged 2-12 years, *Champak*, *Highlights Genies* and *Highlights Champs* are an essential part of your child's reading list.

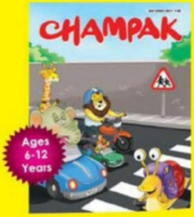
CHAMPAK
Ages 6-12 Years

India's largest read children's magazine

Highlights CHAMPS
Roll Out THE FUN!
Ages 6-12 Years

America's leading children's magazine in now is India!

Highlights Genies
Come In!
Ages 2-6 Years

America's leading early childhood magazine is now in India!

To subscribe : SMS 8588843436 | Call toll free no.1800 103 8880 | visit www.delhipress.in/subscribe | email subscription@delhipress.in

चंपक

अक्तूबर (द्वितीय) 2020 अंक : 1199

संस्थापक
विश्वनाथ
1917-2002

सुनो कहानी

डैनी के गमले 4
दोस्ती का उपहार 10
खुशियां बांटना 17
पीहू की बुद्धिमानी 26
डरावना भूत 33
एलियन की हैलोवीन यात्रा 39
लगी अकल ठिकाने 48

मुखपृष्ठ

चलो, इस दशहरे पर कोरोना वायरस को हराते हैं. अपने हाथों को साफ रखना और मास्क पहनना मत भूलना आप सब को दशहरे की बधाई.

मन बहलाओ

सुंदर रंग भरो 8
दशहरे की मस्ती 9
देखो हंस न देना 14
बताओ तो जानें 16
आओ मिल कर गाओ 20
छिपे चित्र ढूंढ़ें 21
हैलोवीन डे 30
बिंदु मिलाओ 31
चित्र पूरा करें 32
स्मार्ट 36
वर्ल्ड थ्रिफ्ट डे 38
अंतर बताओ 46
गलत को बताएं 47

चित्र कथाएं

डमरू और सब्जियां 13
चीकू 22
दादाजी और दशहरा 42

विशेष पृष्ठ

मजेदार विज्ञान 15
मौंस्टर कूकीज 24
नन्ही कलम से 44

संपादक व प्रकाशक ● परेश नाथ

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. फोन : 41398888, 23529557-62.
दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएस पीसी प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा -121003 से मुद्रित. संपादक - परेश नाथ.

Sold on the condition that jurisdiction for all disputes concerning sale, subscription and published matter will be in courts/forums/tribunals at Delhi.

चंपक में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और किसी से उन की समानता संयोग मात्र है.

प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा भेजना आवश्यक हैं अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी. प्रेषित रचनाओं की सुरक्षा/वापसी के लिए कार्यालय का कोई उत्तरदायित्व नहीं है.

दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए.

'चीकू' शीर्षक भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है. वार्षिक मूल्य केवल क्रेडिट कार्ड/चैक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'चंपक' के नाम से ई-8, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. वी.पी.पी. नहीं. एक प्रति रु. 30.00 (बिना सीडी के),
वार्षिक रु. 576, दो वर्ष रु. 1050. (भारत में)

ग्राहक बनने और वितरण के बारे में विस्तृत जानकारी संपर्क करें:
दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055
फोन: 91-11-41398888, एक्स. नं. 119, 221, 264.
मोबाइल/एसएमएस/व्हाट्सऐप: 08588843408
ईमेल: subscription @ delhipress.in

दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
बी-3, वडाला उद्योग भवन, नैगांव क्रौस रोड, वडाला मुंबई-400031. फोन : 91-22-24122661, 43473050.

● रचनाओं व स्तंभों के लिए ईमेल:	article.hindi @ delhipress.in
● निमंत्रणों व प्रेस सूचनाओं के लिए ईमेल:	invites.pressrelease @ delhipress.biz
● संपादक को पत्रों के लिए ईमेल:	editor @ delhipress. biz
● ग्राहक विभाग के लिए ईमेल:	subscription @ delhipress.in

अपनी कहानी, कविता, ड्राइंग्स तथा क्राफ्ट्स यहां भी भेज सकते हैं :
writetochampak@delhipress.in या एसएमएस करें : 09619587613
www. facebook.com/ChampakMagazine और https://www.youtube.com/ user/ ChampakSciQ

डैनी के गमले

कहानी ● कुमुद कुमार

डैनी हिरन, मीकू खरगोश, गोगो जिराफ और जंपी बंदर आपस में अच्छे दोस्त थे.

चारों दोस्तों ने इस बार दशहरे के मेले में जाने का फैसला किया था. उन के मम्मीपापा ने उन्हें मेला घूमने के लिए 50-50 रुपए दिए थे. आज मेले का आखिरी दिन था. आज राम रावण को मारता है.

रामलीला मैदान में एक तरफ रावण, कुंभकरण और मेघनाद के ऊंचेऊंचे पुतले लगे हुए थे, तो दूसरी ओर रामलीला का मंच सजा हुआ था. जैसे ही मंच पर राम ने रावण को तीर मारा वैसे ही तीनों पुतले धूंधूं कर जल उठे.

इस के बाद चारों दोस्त मेला घूमने निकल पड़े. मेले में भारी भीड़ थी. चारों भीड़ में से अपना रास्ता बनाते हुए आगे बढ़े.

मेले में मिठाई, खिलौने, सुगंधित फूलों, मिट्टी के बरतनों आदि की दुकानें सजी हुई थीं. बड़ेबड़े झूले लगे हुए थे. बंदूक से निशाना लगा कर गुब्बारे फोड़ने वाले की दुकान थी. फिल्मी हीरो और हीरोइनों के बड़ेबड़े कटआउट लगे हुए थे, जिन के साथ कोई भी अपना फोटो खिंचवा सकता था. वहां फोटो खिंचवाने के लिए लंबी कतार लगी थी.

मेले में चाटपकौड़ी, गोलगप्पे, लस्सी और चटपटी चाऊमीन के स्टौल लगे थे. जहां हर कोई स्वादिष्ठ

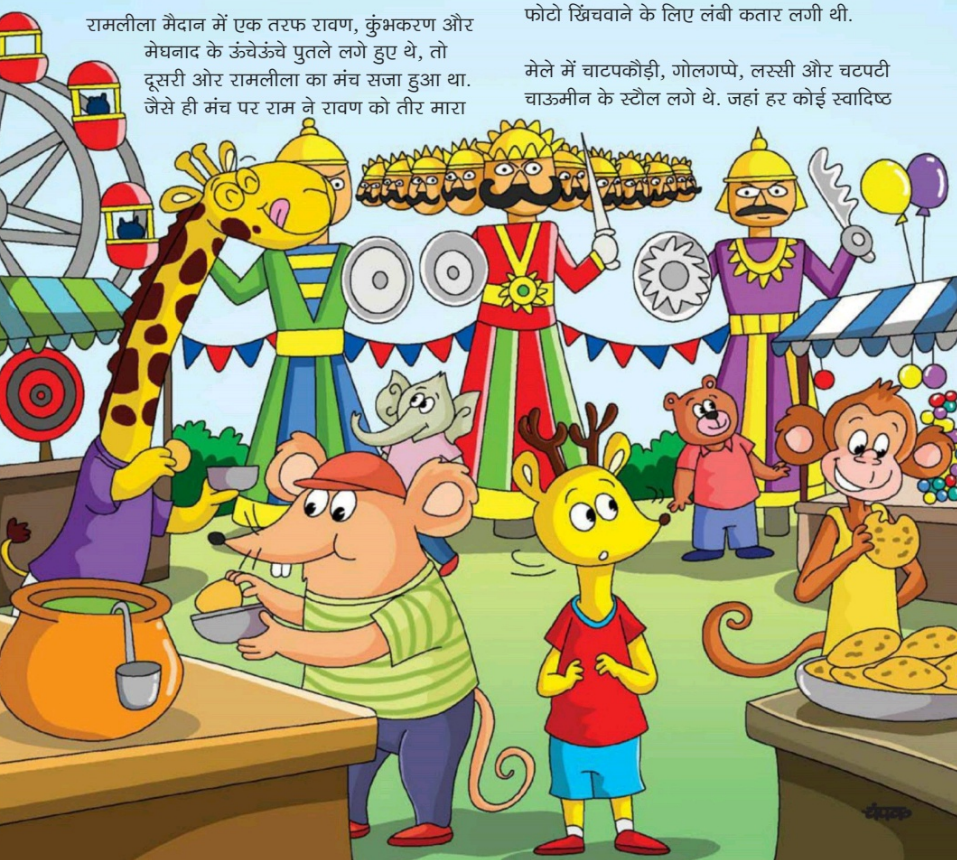

खाना खा रहा था.

कुछ छोटे दुकानदार सड़क पर चादर बिछा कर ही अपना सामान बेच रहे थे.

मेले में घूमते हुए मीकू, गोगो और जंपी भी खाने की चीजों को देख कर उन्हें खाने के लिए लालायित हो उठे. चटपटी चीजों को देख कर उन के मुंह में पानी आ गया.

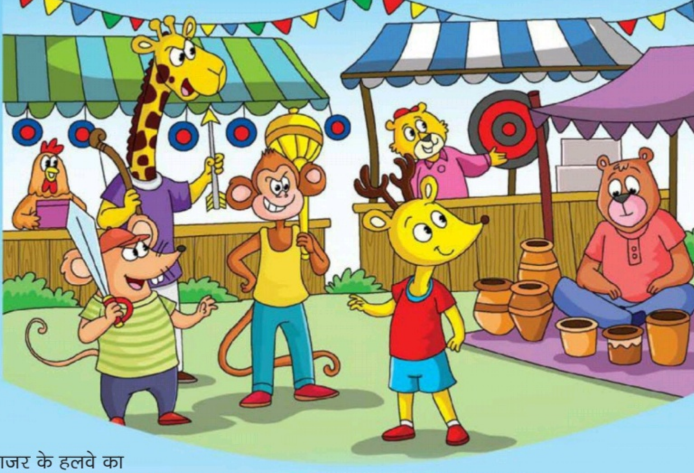

मीकू खरगोश ने गरमगरम गाजर के हलवे का मजा लिया. गोगो जिराफ गोलगप्पे खाने लगा. जंपी बंदर को केले पसंद थे. उस ने जम कर केले खाए. इस के अलावा उन्होंने अपनीअपनी पसंद की अन्य चीजें खाईं.

लेकिन डैनी की खानेपीने में कोई दिलचस्पी नहीं थी. उस की नजरें तो मेले में कुछ और ही चीजें तलाश रही थीं. अभी ऐसी कोई चीज उस की नजर में नहीं आई थी.

मीकू, गोगो और जंपी बड़े झूले पर झूले. इस के बाद मीकू ने मेले में एक चमचमाती रावण की तलवार खरीदी. गोगो जिराफ क्यों पीछे रहता, उस ने राम वाला धनुषबाण खरीदा. जंपी को हनुमान बहुत पसंद था. उस ने हनुमान की गदा खरीदी.

''अरे डैनी, तुम भी कुछ खरीद लो. सारे पैसे बचा कर वापस घर ले जाने का इरादा है क्या?'' मीकू ने तलवार कंधे पर रखते हुए कहा.

यह सुन कर गोगो और जंपी दोनों हंस दिए. गोगो ने धनुष राम की तरह कंधे पर लटका रखा था, जबकि दूसरे हाथ में तीर पकड़ रखी थी. वह आज अपनेआप को पूरा राम समझ रहा था. जंपी ने गदा कंधे पर रख ली और खुद को हनुमान से कम नहीं समझ रहा था.

डैनी अभी भी खाली हाथ था. तभी उस की नजर मिट्टी के बरतन बेचने वाले ब्लैकी भालू पर पड़ी. वह भी लगभग खाली बैठा ग्राहकों का इंतजार कर रहा था. उस के पास इक्कादुक्का ग्राहक ही आ रहे थे.

डैनी की नजर जैसे ही वहां रखे गमलों पर पड़ी, उसे अपने स्कूल में मनाए गए पर्यावरण दिवस की याद आ गई. इस अवसर पर उस के स्कूल में वन अधिकारी जीतू चीता मुख्य अतिथि बन कर आए थे. उन्होंने कहा था, ''प्यारे बच्चो, पेड़ हमें सांस लेने के लिए औक्सीजन देते हैं. खाने के लिए ताजे फल देते हैं और निरोगी रहने के लिए औषधियां देते हैं. वे जलाने और फर्नीचर बनाने के लिए हमे लकड़ी देते हैं. बच्चो, पेड़ हैं, तो जीवन है. पर्यावरण का सब से बड़ा दुश्मन राक्षसराज रावण रूपी वायु प्रदूषण है, जिसे पेड़पौधे लगा कर ही हराया जा सकता है.''

यह बात ध्यान में आते ही डैनी ने सोचा कि दशहरा का सही अर्थ ही विभिन्न बुराइयों के प्रतीक रावण से लड़ना है. फिर क्यों न पेड़पौधे लगा कर वायु प्रदूषण नामक राक्षस से लड़ा जाए. वह ब्लैकी के पास गया और उस से पूछा, ''ताऊजी, एक गमला कितने का है?''

''बेटा, एक गमला 30 रुपए का है.''

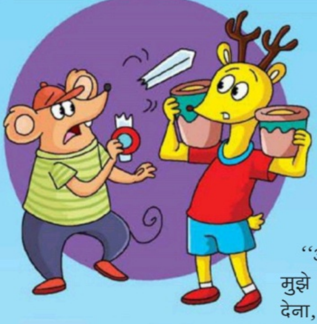

“ताऊजी, अगर मैं 2 गमले लूं तब कितने के दोगे?”

“अरे बेटा, तुम मुझे 2 रुपए कम दे देना,” ब्लैकी ने कहा.

डैनी ने मोलभाव कर के 2 गमले 50 रुपए में खरीद लिए.

गमले इतने भारी थे कि डैनी उन्हें हाथ में ले कर नहीं चल सकता था. उस ने दोनों गमलों को अपने दोनों कंधों पर रख लिया.

यह देख कर मीकू ने म्यान से अपनी चमचमाती तलवार निकालते हुए कहा, “डैनी, मेले से गमले भी कोई खरीदने की चीज है. यह देखो, मेरी चमचमाती तलवार जो एक ही वार में दुश्मन की गरदन काट दे.”

मीकू अपनी चमचमाती तलवार को सांयसांय हवा में लहराने लगा. डैनी डर के कारण कुछ पीछे हट गया, लेकिन नकली तलवार को तेज लहराते ही उस का कमजोर हत्था उस के फलक से अलग हो गया. तलवार का हत्था मीकू के हाथ में और उस का फलक जमीन पर पड़ा था. यह देख मीकू का चेहरा लटक गया. उस के पास टूटी तलवार को वापस म्यान में रखने के सिवा कोई रास्ता नहीं था.

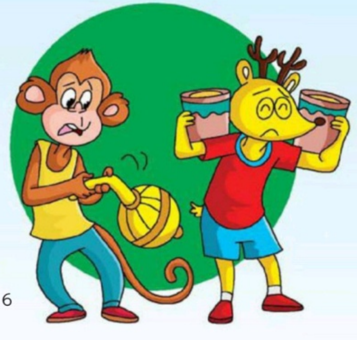

यह देख गोगो जिराफ ने कहा, “डैनी, मीकू की तलवार तो नकली थी. यह देखो, मेरा असली धनुषबाण. यह कर देता है एक ही तीर से दुश्मन का काम तमाम.”

यह कहते हुए गोगो ने धनुष पर बाण चढ़ाने के लिए जोर से धनुष की डोर खींची, लेकिन यह क्या, जोर से खींचते ही धनुष की डोर टूट गई. बेचारा गोगो शर्मिंदा हो कर धनुष की टूटी डोर जोड़ने लगा.

अब जंपी की बारी थी अपने तेवर दिखाने की. वह अपनी गदा घुमाता हुआ आया और बोला, “डैनी, यह देखो मेरी गदा. अगर तुम्हारे गमलों पर इसे दे मारूं तो ये चकनाचूर हो जाएंगे.”

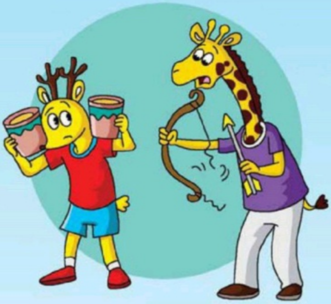

यह सुन कर डैनी डर गया. वह जानता था कि जंपी शरारती है. इस का कोई विश्वास नहीं. क्या पता यह सचमुच ही मेरे गमलों पर अपनी गदा का प्रहार कर इन्हें तोड़ दे? इसलिए डैनी ने अपने गमले अपने कंधों पर और मजबूती से पकड़ लिए.

लेकिन जंपी कहां मानने वाला था. उस ने तो देखते ही देखते अपनी गदा का जोरदार प्रहार डैनी के गमलों पर कर दिया. यह क्या, डैनी के गमलों का तो कुछ बिगड़ा ही नहीं. हां, जंपी की गदा जरूर बुरी तरह पिचक गई.

पिचकी हुई गदा देख कर जंपी का चेहरा उतर गया.

वह अपनी पिचकी हुई गदा को जैसेतैसे ठीक करने लगा.

रास्ते भर मीकू, गोगो और जंपी चुपचाप चलते रहे. बोलते भी कैसे? तीनों के हथियार तो टूटफूट चुके थे, जबकि डैनी अपने मजबूत गमलों के साथ शान से चल रहा था.

डैनी के घर पहुंचने पर उस की मां ने कहा, ''बेटा डैनी, तू ये गमले क्यों ले आया? मेले में घूमने गया था तो कुछ चाटकचौड़ी खा लेता.''

''मां, आप खाना इतना स्वादिष्ठ बनाती हो कि उस के स्वाद के सामने मेले की सब खानेपीने की चीजें फीकी लग रही थीं. इसलिए मैं ने कुछ नहीं खाया. लाओ, अब जल्दी से कुछ स्वादिष्ठ भोजन खाने को दे दो.''

अपने बेटे की मासूमियत पर मां का दिल पिघल गया. उन्होंने डैनी को गले लगा लिया और अपनी गोद में बैठा कर प्यार से उसे खाना खिलाया.

डैनी ने दोनों गमलों में पौधे लगाए, उन की अच्छे से देखभाल की. कुछ ही दिनों में दोनों पौधे बड़े हो गए. घर में हरियाली दिखाई देने लगी. डैनी के मम्मीपापा घर में हरियाली देख कर बड़े खुश हुए. उन्होंने डैनी को और पौधे लगाने के लिए प्रोत्साहित किया.

एक दिन मीकू, गोगो और जंपी डैनी के घर आए. डैनी ने उन्हें गमलों में लगे हरेभरे पौधे दिखाए. गमलों में लगे पौधों को देख कर डैनी के दोस्त हैरान रह गए. वे गमलों में लगे पौधों के साथ सैल्फी लेने से खुद को रोक न सके.

अब मीकू, गोगो और जंपी ने निर्णय लिया कि वे भी डैनी की तरह अपना जेबखर्च बचाएंगे. उस पैसे से गमले खरीदेंगे और उन में पौधे लगा कर अपने घर को हराभरा रखेंगे. इस से पर्यावरण भी स्वच्छ रहेगा और वायु प्रदूषण जैसे रावण से लड़ने में मदद भी मिलेगी. ●

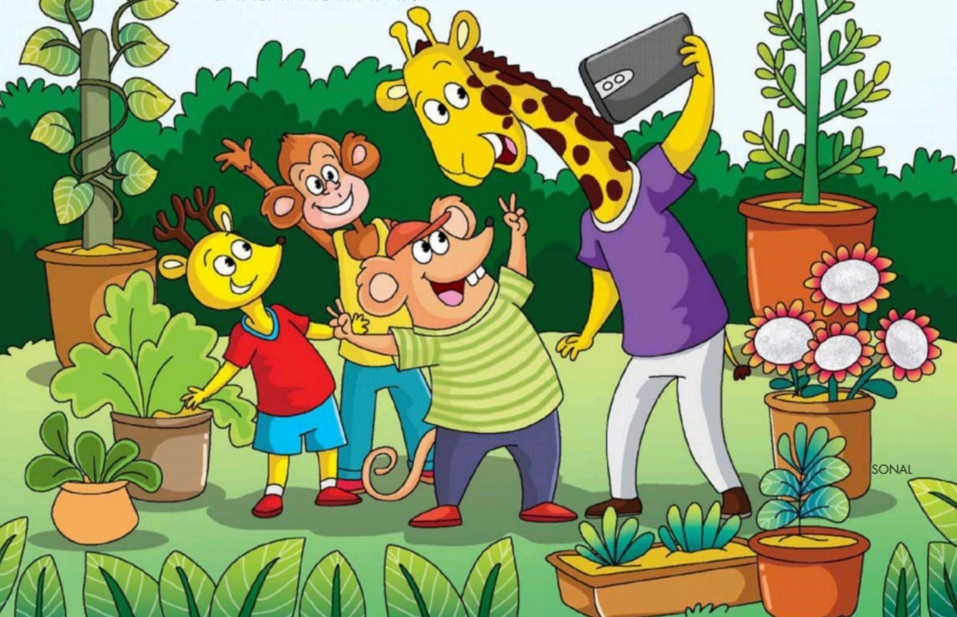

सुंदर रंग भरो

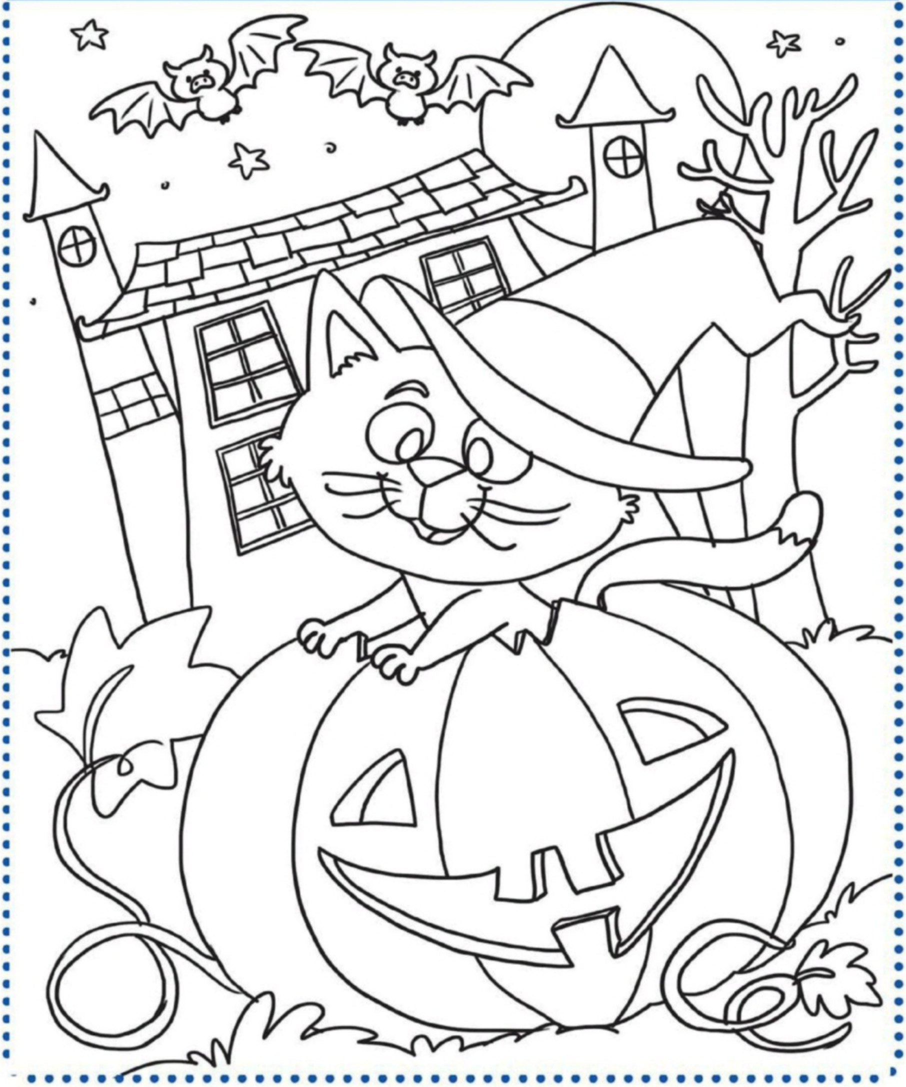

दशहरे की मस्ती

इस वर्ष नवरात्रि के 9 दिन बाद दशहरे का त्योहार 25 अक्तूबर को मनाया जाएगा. पता कीजिए कि किस रंग के कपड़े को किस दिन पहना जाता है?

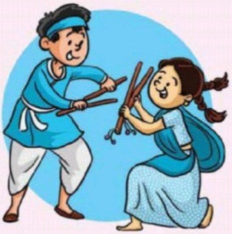

____

चौथे दिन के कपड़ों का रंग आसमानी होता है जब तीखी और चमकीली धूप भी रहेगी.

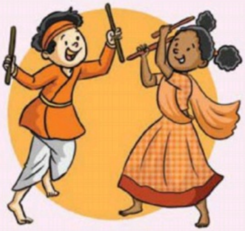

____

पहले दिन के कपड़ों का रंग बिलकुल वैसा ही है जैसा एक फल का नाम.

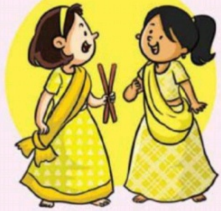

____

5वें दिन के कपड़ों का रंग सूरजमुखी के रंगों से मेल खाता है.

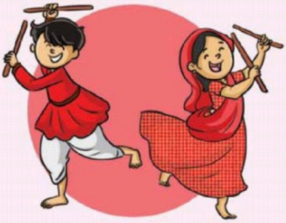

____

तीसरे दिन के कपड़ों का रंग तरबूज के अंदर का रंग जैसा होता है.

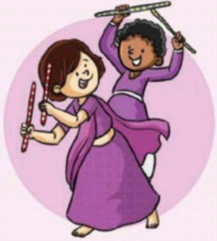

____

8वें दिन के कपड़ों का रंग बैगन जैसा का होता है.

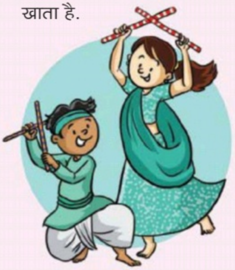

____

9वें दिन के कपड़ों का रंग हमारे देश के राष्ट्रीय पक्षी के रंग पर आधारित है.

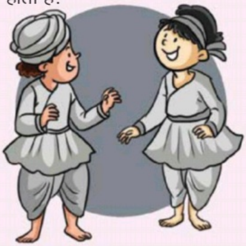

____

7वें दिन पहने जाने वाले कपड़ों का रंग मौनसूनी आसमान से मिलताजुलता है.

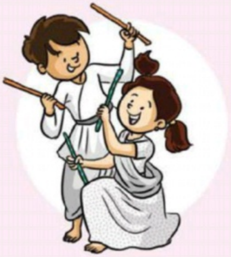

____

दूसरे दिन के कपड़ों का रंग शांति के चिन्ह के सदृश है.

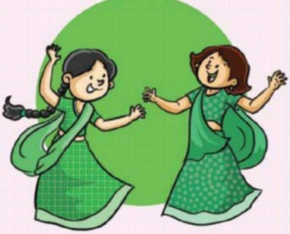

____

छठे दिन पहने जाने वाले कपड़ों का रंग तोते के रंग जैसा होता है.

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

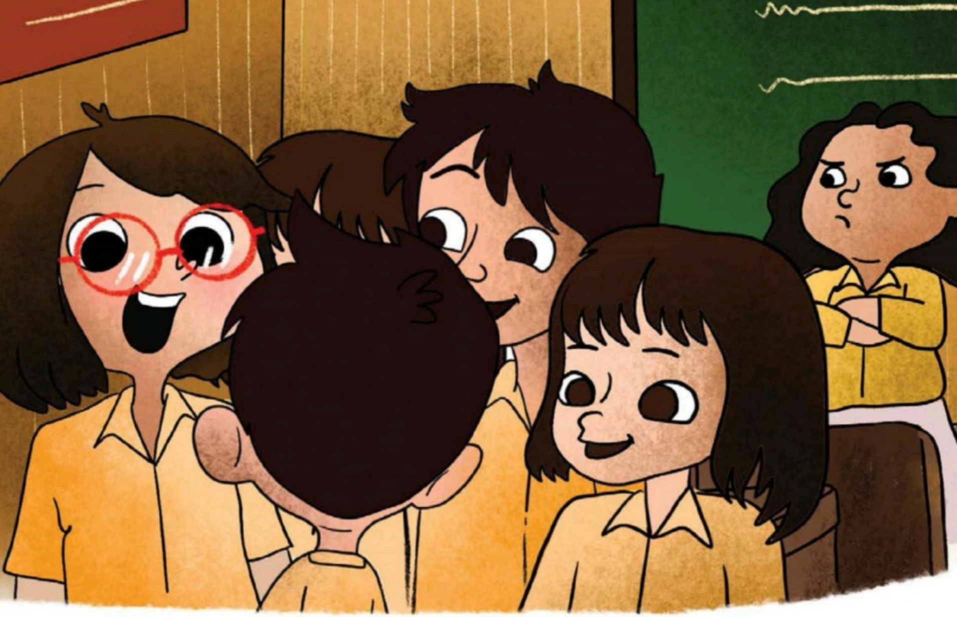

दोस्ती का उपहार

कहानी ● आशा शर्मा

रीमा को टिया बिलकुल भी पसंद नहीं थी, क्योंकि उस ने स्कूल में अभी दाखिला लिया था और आते ही वह सारी टीचर्स की चहेती बन गई. और तो और उस की सहेलियां तक टिया ने अपनी बना लीं.

जानती हूं कि टिया पढ़ाईलिखाई में बहुत अच्छी है और ड्राइंग भी ठीकठाक बना लेती है, लेकिन इस का मतलब यह तो नहीं कि सब मुझे अनदेखा कर टिया के दोस्त बन जाएं, रीमा मन ही मन सोचती और कुढ़ती रहती.

सिर्फ स्कूल ही नहीं, अब तो टिया उस की कालौनी में भी रहने आ गई थी. दरअसल, रीमा और टिया के पापा एक ही औफिस में काम करते थे. इसलिए उन्हें एक ही कालौनी में घर मिले हुए थे.

हर रोज रीमा की मम्मी उसे टिया के साथ खेलने और स्कूल जाने को कहती, जो रीमा को बिलकुल भी अच्छा नहीं लगता.

मां अकसर रीमा से पूछतीं कि नवरात्रि उत्सव में टिया को भी साथ ले जाना, क्योंकि नवरात्रि का त्योहार कालौनी में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता था.

कालौनी के सैंट्रल पार्क में 9 दिन तक कालौनीवासियों द्वारा गरबा नृत्य का आयोजन किया जाता था.

रीमा का उत्साह तो नवरात्रि के 8वें दिन होने वाले कन्यापूजन को ले कर था.

''अहा, दशहरा का त्योहार बहुत मजेदार है. मुझे स्वादिष्ठ भोजन और उस दिन मिलने वाले उपहार बहुत पसंद हैं, मेरी सभी चाचियां अदभुत उपहार जैसे टिफिन बौक्स, रूमाल, हेयर पिन आदि 8वें दिन देंगी,'' रीमा ने बताया.

नवरात्रि के 8वें दिन जिसे अष्टमी के नाम से भी जाना जाता है, रीमा को खाने के लिए कालौनी की कई आंटियों के बुलावे आने लगे.

रीमा भी बिलकुल गुड़िया की तरह सज कर बैठी अपनी सहेलियों का इंतजार कर रही थी. कुछ ही देर में उस की सब सहेलियां आ गईं. टिया भी उन के साथ थी. उसे देखते ही रीमा ने अपना मुंह घुमा लिया, लेकिन टिया ने उस की तरफ अधिक ध्यान नहीं दिया.

लड़कियां पहले जिस घर में गईं वह मीना मौसी का घर था. उन्होंने स्वादिष्ठ खाना परोसा, जो उन लड़कियों को पसंद था.

''मौसी, मेरा बचा हुआ खाना पैक कर दीजिए,'' ''टिया ने थोड़ा सा खाना अलग प्लेट में निकाल कर बाकी मीना मौसी की तरफ बढ़ा दिया. सभी लड़कियों की यह देख कर हैरानी हुई कि टिया खाने के पैकेट बैग में रख रही है. मीना मौसी ने उन्हें ज्योमैट्री बौक्स गिफ्ट किए.

इस के बाद विधिना आंटी, गीता आंटी और सविता आंटी के घर पर भी टिया ने यही किया. थोड़ा सा खाना अलग निकाल कर खाया और बचे हुए को पैक करवा कर अपने बैग में रख लिया, जबकि रीमा और बाकी लड़कियों ने प्लेट भरभर कर खाना जूठा छोड़ा.

दोपहर के बाद जब सब लड़कियां अपने घर वापस जाने लगीं तो टिया को घर न जाता देख कर रीमा को हैरानी हुई. उस ने अपनी सब सहेलियों को इशारे से वापस बुलाया और पूछा, ''ये टिया कहां जा रही है?''

''पता नहीं,'' कहते हुए सहेलियों ने कंधे उचका दिए.

''जरूर यह खाना कचरे के डब्बे में फेंकने जा रही है. चलो, चल कर देखते हैं. यह सब के सामने तो

बड़ी अच्छी लड़की बनती है,'' कहते हुए रीमा अपनी सहेलियों के साथ टिया के पीछे हो ली.

टिया कालौनी के गेट से बाहर निकल गई. वह डस्टबिन के पास नहीं रुकी. वह लगातार चलती रही.

लड़कियां उसे छिप कर देखने लगीं कि टिया कहां जाती है. टिया डस्टबिन से भी आगे निकल गई.

''कहां जा रही है ये?'' किसी को कुछ समझ नहीं आया. सब छिपतीछिपाती उस का पीछा करती रहीं.

थोड़ी देर में उन्होंने देखा कि टिया झुग्गीबस्ती की तरफ मुड़ गई. टिया अपने बैग से खाने के पैकेट निकाल कर बच्चों में बांटने लगी. सब की आंखें खुली की खुली रह गईं. रीमा को अपनी हरकत पर बहुत शरम आ रही थी. आज टिया उसे अच्छी लगने लगी थी. सब वहीं खड़ी हो कर टिया का इंतजार करने लगी.

''वाह टिया, ये तुम ने बहुत अच्छा किया. मेरी मां भी हमेशा कहती हैं कि खाना बरबाद नहीं करना चाहिए,'' एक सहेली ने कहा तो टिया मुसकरा दी.

''हम तो सोच रहे थे कि तुम खाना कचरे में फेंकने जा रही हो. इसलिए तुम्हारा पीछा कर रहे थे,'' दूसरी ने कहा तो रीमा सब के आगे आ कर खड़ी हो गई.

''यह मेरे ही दिमाग में आया था. मुझे माफ कर दो टिया, मैं हमेशा तुम्हें नापसंद करती थी,'' रीमा ने उस के हाथ थाम लिए.

''अब तो मेरी सहेली बनोगी न,'' टिया ने पूछा.

''एकदम पक्की वाली. अरे, तुम तो अष्टमी का उपहार हो,'' कहते हुए रीमा ने उस के गले में हाथ डाल दिए.

उस दिन के बाद दोनों पक्की सहेलियां बन गई. ●

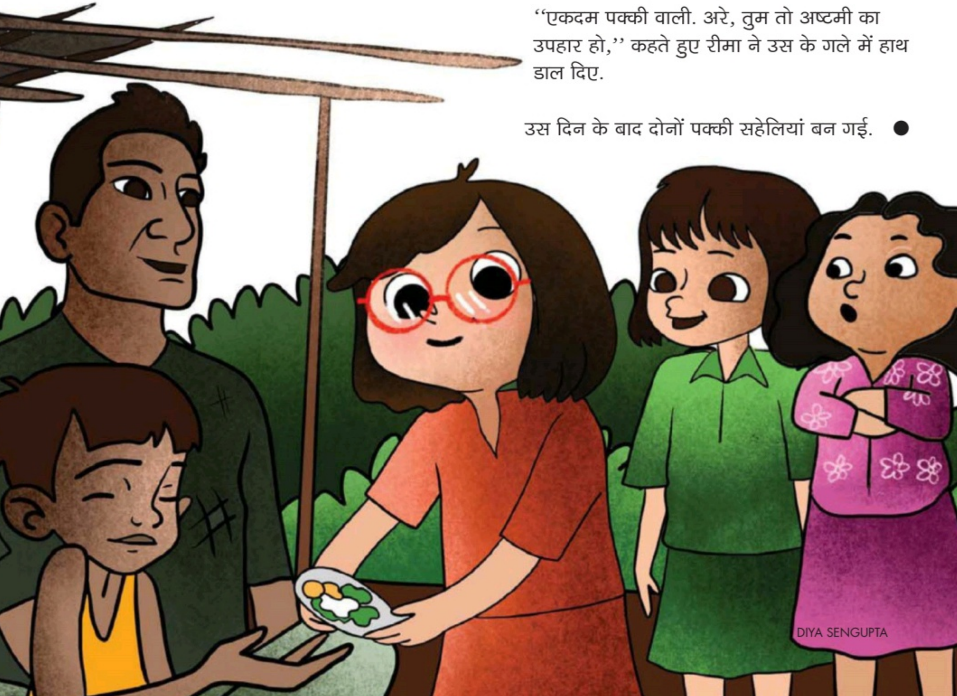
DIYA SENGUPTA

डमरू और सब्जियां

कहानी ● शिवेश श्रीवास्तव

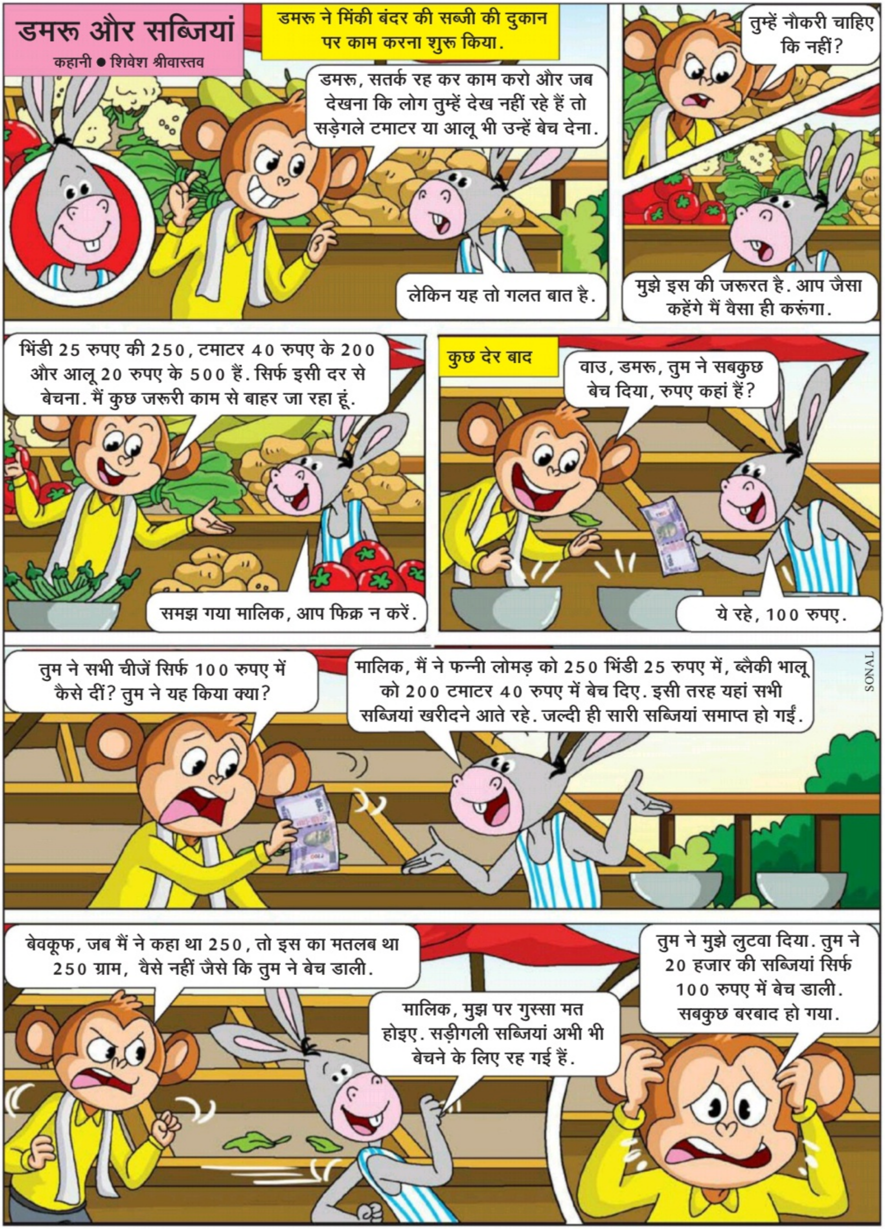
डमरू ने मिंकी बंदर की सब्जी की दुकान पर काम करना शुरू किया.
डमरू, सतर्क रह कर काम करो और जब देखना कि लोग तुम्हें देख नहीं रहे हैं तो सड़ेगले टमाटर या आलू भी उन्हें बेच देना.
लेकिन यह तो गलत बात है.
तुम्हें नौकरी चाहिए कि नहीं?
मुझे इस की जरूरत है. आप जैसा कहेंगे मैं वैसा ही करूंगा.
भिंडी 25 रुपए की 250, टमाटर 40 रुपए के 200 और आलू 20 रुपए के 500 हैं. सिर्फ इसी दर से बेचना. मैं कुछ जरूरी काम से बाहर जा रहा हूं.
समझ गया मालिक, आप फिक्र न करें.
कुछ देर बाद
वाउ, डमरू, तुम ने सबकुछ बेच दिया, रुपए कहां हैं?
ये रहे, 100 रुपए.
तुम ने सभी चीजें सिर्फ 100 रुपए में कैसे दीं? तुम ने यह किया क्या?
मालिक, मैं ने फन्नी लोमड़ को 250 भिंडी 25 रुपए में, ब्लैकी भालू को 200 टमाटर 40 रुपए में बेच दिए. इसी तरह यहां सभी सब्जियां खरीदने आते रहे. जल्दी ही सारी सब्जियां समाप्त हो गईं.
SONAL
बेवकूफ, जब मैं ने कहा था 250, तो इस का मतलब था 250 ग्राम, वैसे नहीं जैसे कि तुम ने बेच डाली.
मालिक, मुझ पर गुस्सा मत होइए. सड़ीगली सब्जियां अभी भी बेचने के लिए रह गई हैं.
तुम ने मुझे लुटवा दिया. तुम ने 20 हजार की सब्जियां सिर्फ 100 रुपए में बेच डाली. सबकुछ बरबाद हो गया.

देखो हंस न देना

टीचर (छात्र से) : अपनी उत्तर पुस्तिका छिपा लो, तुम्हारे पीछे जो बैठा है, वह तुम्हारे उत्तर कौपी कर रहा है.

छात्र : सर, उसे कौपी करने दीजिए, मैं अकेला ही फेल नहीं होना चाहता.

भावेश, 14 वर्ष
चैन्नई

टीचर (छात्र से) : एक जंतु का नाम बताओ जो धरती के साथसाथ पानी में भी जिंदा रह सकता है?

छात्र : मेढक

टीचर : बहुत अच्छा, एक और नाम बताओ?

छात्र : दूसरा मेढक.

सन्नी मेहता, 11 वर्ष
मुंबई

मोनू (सोनू से) : छात्र ने अपना होमवर्क क्यों निगल लिया?

सोनू : क्योंकि टीचर ने उसे कहा था कि यह होमवर्क केक का एक टुकड़ा है.

सूर्यांश सिंह, 7 वर्ष,
अहमदाबाद

किट्टू (बिट्टू से) : क्या एक कंगारू स्काइक्रैपर यानी गगनचुंबी इमारत से भी ऊंचा कूद सकता है?

बिट्टू : हां, क्योंकि स्काइक्रैपर कूद नहीं सकता.

तानिषि अग्रवाल, 8 वर्ष
अहमदाबाद

हाहाहा हाहाहा हीहीही हीहीही

चीनू (मोनू से) : बेस बौल गेम में तुम कौन से जानवर को हमेशा देख सकते हो?

मोनू : चमगादड़.

वैष्णव के, 8 वर्ष, केरल

रोहित (मीना से) : मीना, मैं तुम से एक सवाल पूछना चाहता हूं.

मीना : हां, पूछो.

रोहित : एक घर में दो लड़के रहते थे, एक का नाम था, 'मुझे नहीं पता.' और दूसरे का नाम था, 'मुझे पता है.' अगर एक दिन 'मुझे पता है' बाजार गया, तो घर पर कौन रह गया?

मीना : मुझे नहीं पता.

रोहित : क्या? तुम्हें नहीं पता? यह तो बड़ा आसान सवाल था.

रियान दत्ता, 9 वर्ष, रांची

टीचर (पिंटू से) : पानी का रासायनिक फौर्मूला क्या है?

पिंटू : एच, आई, जे, के, एल, एम, एन, ओ.

टीचर : यह क्या है पिंटू?

पिंटू : मैम, आप ने ही तो कहा था एच टू ओ.

चार्मी छावड़ा, 12 वर्ष, बड़ोदरा

छात्र 1 (छात्र 2 से) : स्वतंत्रता दिवस क्या है?

छात्र 2 : वह दिन जब हमें आजादी मिली थी.

छात्र 1 : क्या तुम्हें स्वतंत्रता दिवस की तारीख याद है?

छात्र 2 : उस दिन का इंतजार करो.

छात्र 1 : तुम्हारा क्या मतलब है?

छात्र 2 : मैं अपने स्कूल से अपनी स्वतंत्रता के लिए बात कर रहा हूं.

दिव्य लक्ष्मी के, 12 वर्ष
चैन्नई

टीचर (छात्र से) : 1869 में क्या हुआ था?

छात्र : मैं तब पैदा नहीं हुआ था.

हैली गोंडालिया, 10 वर्ष
अहमदाबाद

सन्नी (बबलू से) : ऐसा क्या है जिस की एक रिंग है, लेकिन उंगलियां नहीं हैं.

बबलू : एक टैलीफोन.

प्रियाल गौडमायर, 9 वर्ष
महाराष्ट्र

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:
चंपक, दिल्ली प्रेस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई - 400031
ईमल : writetochampak@delhipress.in
और SMS: 9619587613
औनलाइन विजिट करें :
www.facebook.com/ChampakMagazine
https://www.youtube.com/ChampakSciQ

मजेदार विज्ञान

साल्ट वाटर में रंग मिलाएं

आइए, जानते हैं, तब क्या होता है, जब साल्ट वाटर यानी लवण जल में रंग मिलाते हैं.

आप को चाहिए :

- दो गिलास पानी
- फूड कलर
- 3 से 5 चम्मच नमक

ऐसा करें :

1. एक गिलास में नमक मिलाएं और इसे तब तक हिलाते रहें जब तक कि वह घुल न जाए.

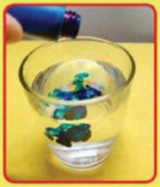

2. सादे पानी में कुछ बूंद फूड कलर की मिलाएं.

3. साल्ट वाटर यानी लवण जल में कुछ बूंद फूड कलर डालें.

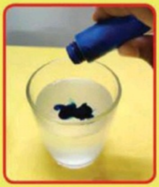

देखें :

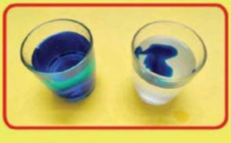

जब आप सादा पानी वाले गिलास में फूड कलर डालते हैं तो फूड कलर डूब जाता है. और पानी में घुल जाता है, लेकिन जब आप साल्ट वाटर वाले गिलास में फूड कलर डालते हैं तो यह ऊपर तैरता है और घुलता नहीं है.

सोचें :

साल्ट वाटर यानी लवण जल में फूड कलर घुलता क्यों नहीं है?

दिए हुए स्थान में एक पदार्थ का घनत्व उस के अणुओं की संख्या को कहते हैं. उच्च घनत्व वाले पदार्थ का मतलब है कि बहुत अधिक संख्या में अणुओं की उपस्थिति जबकि कम घनत्व का मतलब है जिस पदार्थ में अणुओं की संख्या कम है. एक पदार्थ के किसी अन्य पदार्थ में तैरने का मतलब है कि तैरने वाले का घनत्व दूसरे वाले से कम होना चाहिए. हमारे इस प्रयोग में जब नमक को पानी में मिलाया जाता है तो इस से पानी का घनत्व बढ़ जाता है, क्योंकि पानी के अणु नमक के अणु से एकदूसरे के साथ मिल कर इकट्ठा हो जाते हैं यानी कस कर एकदूसरे को जकड़ लेते हैं. जब हम फूड कलर को मिलाते हैं, इस का घनत्व लवण जल यानी साल्ट वाटर से कम रहता है. इसीलिए फूड कलर साल्ट वाटर में घुलने के बजाय तैरता है.

पता करें :

commons.wikimedia.org

साफ पानी में तैरना आसान है या समुद्री पानी में, जानिए :

समुद्र के जल का घनत्व साफ जल के घनत्व से ज्यादा होता है, क्योंकि इस में नमक ज्यादा घुला होता है. किसी तरल पदार्थ का घनत्व जितना ज्यादा होगा उस पर तैरना या बहना उतना ही आसान होगा. मनुष्य का शरीर साफ पानी की तुलना में ज्यादा घनत्व वाला होता है, लेकिन साल्ट वाटर का घनत्व साफ पानी से ज्यादा होता है, जो इसे इस में तैरने में आसान बनाता है.

बताओ तो जानें

1. मेरा इस्तेमाल लोग करें
घर के बाहर और भीतर
मैं कोरोना वायरस का हूं दुश्मन
एक दिन इसे रोक दूंगा.

2. मेरे एक छोर पर
भूरा सा भारी बोझ है
जब मुझे रगड़ा जाता
झट से आग लगाता.

3. तीन अक्षर का मेरा नाम
उलटासीधा एक समान
समुद्र में दूरदूर तक
सब को सैर कराता हूं.

4. आसमान में देखा जाऊं
मैं रंगबिरंगा होता हूं
7 रंगों में मुझे देख कर
तुम खुश हो जाते हो.

देखें तुम कितना जानते हो

1. वीडियो गेम का आविष्कारक कौन है?
   (क) कार्ल बेंज
   (ख) हैनरी मौसली
   (ग) राल्फ बायर
   (घ) ऐलि व्हिटनी

2. विश्व का सब से ऊंचा स्मारक कौन सा है?
   (क) गेटवे आर्क
   (ख) कुतुबमीनार
   (ग) एफिल टावर
   (घ) द एंपायर ऐस्टेट बिल्डिंग

3. द क्रोनिकल्स औफ नारनिया नामक पुस्तक किस ने लिखी?
   (क) चार्ल्स डिकेंस
   (ख) जे के रौलिंग
   (ग) लेविस कैरोल
   (घ) सी एस लेविस

4. फ्लाइंग सिख औफ इंडिया के नाम से किसे जाना जाता है?
   (क) उसैन बोल्ट
   (ख) मिल्खा सिंह
   (ग) संदीप सिंह
   (घ) नवजोत सिंह

उत्तर (बताओ तो जानें) : 1– सैनिटाइजर, 2–माचिस की तिल्ली , 3–जहाज, 4–इंद्रधनुष.
उत्तर (देखें कितना जानते हो?) : 1–ग, 2–क , 3–घ, 4–ख.

खुशियां बांटना

कहानी ● ललित शौर्य

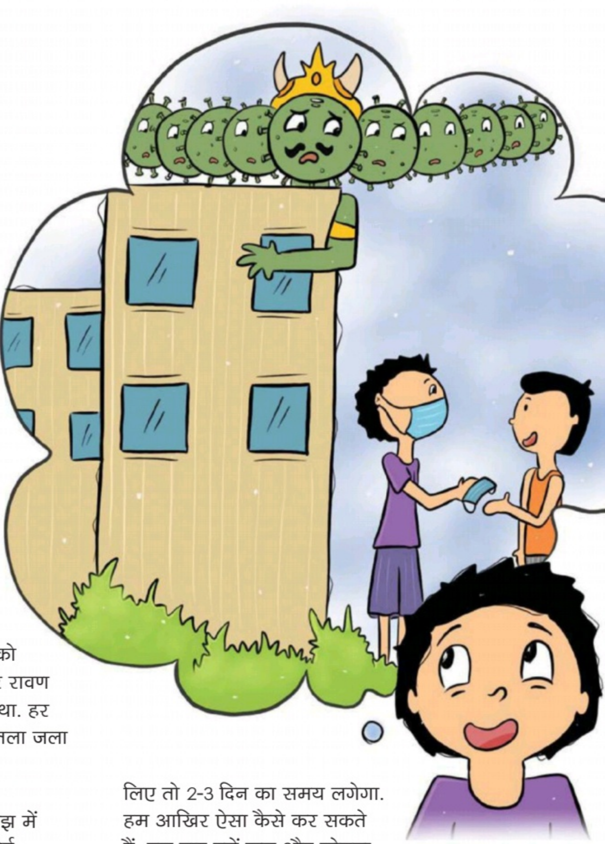

ओजस और उस के साथी इस साल दशहरा के बारे में सोच रहे थे कि आखिर दशहरा कैसे मनाया जाए? कोरोना वायरस महामारी के कारण उन का बाहर निकलना मुश्किल हो गया था, सोशल डिस्टेंसिंग के कारण बड़े समारोहों को मनाने की अनुमति नहीं थी, न ही इस बार रावण का पुतला बनाया और जलाया जा सकता था. हर वर्ष ओजस और उस की टीम रावण का पुतला जला कर दशहरा मनाती थी.

‘‘इस साल क्या किया जाए, मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा है, क्या तुम लोगों के पास कोई आइडिया है,’’ ओजस ने अपने दोस्तों से वीडियो कौल कर के पूछा.

‘‘हम त्योहार के दौरान घर पर नहीं बैठ सकते, हर वर्ष हम ने दशहरा धूमधाम से मनाया है,’’ सावन ने कहा.

‘‘सावन ठीक कह रहा है, हमें कुछ तो सोचना पड़ेगा. मास्क पहन कर सोशल डिस्टेंसिंग के साथ हम त्योहार मना सकते हैं,’’ चंदन बोला.

‘‘लेकिन हम रावण का पुतला कैसे बनाएंगे? इस के लिए तो 2-3 दिन का समय लगेगा. हम आखिर ऐसा कैसे कर सकते हैं. इस बार हमें कुछ और सोचना होगा,’’ सावन ने कहा.

‘‘हम सब इस बारे में सोचते हैं और शाम को बात करते हैं,’’ ओजस बोला और उस ने वीडियो कौल काट दी.

ओजस अभी भी इस बारे में सोच रहा था. दादाजी ने उसे देखा और पूछा, ‘‘क्या बात है ओजस? किस सोच में डूबे हो?’’

‘‘दादाजी, कुछ नहीं. बस ऐसे ही मैं विचारों में खो गया था,’’ ओजस बोला.

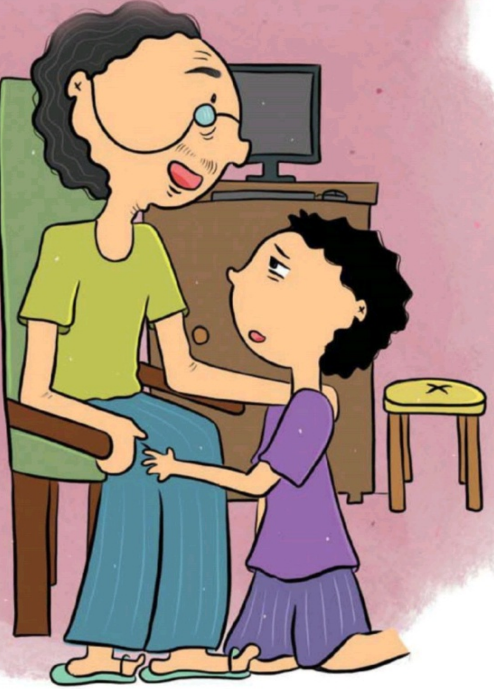

''अरे, बताओ भी. कुछ तो सोच रहे हो,'' दादाजी ने पूछते हुए कहा.

''मैं सोच रहा था कि इस बार हम दशहरा कैसे सैलिब्रेट करेंगे? कोरोना वायरस के चलते दशहरा का मेला भी रद्द कर दिया गया है,'' ओजस ने दुखी हो कर कहा.

''बेटा, उदास मत हो. त्योहार उदासी के लिए नहीं खुशी मनाने के लिए होते हैं. इस बार का दशहरा तो बहुत खास हो सकता है,'' दादाजी ने कहा.

''खास कैसे दादाजी?'' ओजस ने पूछा.

''तुम्हें पता है न दशहरा क्यों मनाया जाता है? यह त्योहार बुराई पर अच्छाई की जीत का संदेश देता है. आज चारों ओर कोरोना वायरस रूपी बुराई छाई हुई है. इस से लड़ने और उबरने के लिए हमें तैयार होना होगा, जो तैयार नहीं हैं उन्हें तैयार करना होगा,'' दादाजी ने समझाया.

''हम तो पूरी तरह तैयार हैं दादाजी. मैं और मेरे दोस्त समयसमय पर हाथ धोते हैं. जब बहुत जरूरी हो तभी घर से बाहर निकलते हैं. मुंह पर मास्क लगाते हैं. हर समय सैनेटाइजर का इस्तेमाल करते हैं,'' ओजस ने गर्व से बताया.

''यह अच्छी बात है, लेकिन अभी बहुत सारे लोग इन बातों को नहीं समझ पा रहे हैं. हमारे घर से कुछ दूरी पर जो बस्ती है, वहां अभी बच्चे और बूढ़े बिना फेसमास्क लगाए दिखाई दे रहे हैं. हम ने देखा कि खाने के स्टौल के पास पढ़ेलिखे लोग भी बिना फेसमास्क लगाए और सोशल डिस्टेंसिंग का पालन नहीं कर रहे थे. लोग अभी भी सड़कों पर थूक रहे थे. उन्हें जागरूक किया जा सकता है. उन्हें फेसमास्क और साबुन बांटा जा सकता है, इन लोगों को सैनेटाइज कर के कोरोना वायरस को रोका जा सकता है,'' दादाजी ने समझाया.

''वाह, यह आइडिया तो बहुत अच्छा है दादाजी. जो रुपए हम रावण का पुतला बनाने में खर्च करते थे. उसे मास्क और साबुन खरीदने में खर्च किया जा सकता है. मैं यह बात अभी अपने दोस्तों को भी बताता हूं. हम इस दशहरे को यादगार बनाएंगे,'' ओजस ने उत्साहित हो कर कहा.

''हां, लेकिन आप अपना और दोस्तों का ध्यान रखना. ये कुछ रुपए रखो, इन से मास्क और साबुन खरीद लेना,'' दादाजी ने अपनी जेब से रुपए निकाल कर देते हुए कहा.

''थैंक्स दादाजी,'' ओजस ने कहा.

ओजस इस आइडिया से बेहद खुश था. उस ने तुरंत अपने दोस्तों को वीडियो कौल की और सब को दादाजी का विचार बताया.

''हम सभी अपने गुल्लक से रुपए निकालेंगे और फिर उस से मास्क और साबुन खरीदेंगे. बाद में हम पास वाली बस्ती में जा कर इन्हें बच्चों और बड़ों में बांटेंगे. उन्हें संक्रमण से बचने के लिए मास्क पहनने और बारबार हाथ धोने की बात भी बताएंगे,'' ओजस ने बताया.

ओजस की बातों से उस के सभी दोस्त सहमत हुए. उन्होंने दशहरे के दिन मिलने का फैसला किया. ओजस ने फोन काटा और गुल्लक से रुपए निकाल कर गिनने लगा.

उस के सभी साथियों ने भी अपनेअपने गुल्लक से रुपए निकाल कर फेसमास्क, साबुन और सैनेटाइजर खरीद लिए. उन्होंने अपनी कालौनी के बाहर एक छोटी सी टेबल लगाई और बच्चों व बड़ों को मास्क और साबुन बांटे. उन्हें कोरोना वायरस से बचाव के तरीके बताए. सभी को सोशल डिस्टेंसिंग का महत्त्व समझाया और पोस्टर लगाए. साथ ही लोगों को सड़कों पर न थूकने और भीड़भाड़ वाली जगहों पर न जाने की भी हिदायत दी.

मास्क पा कर बस्ती के बच्चों के चेहरे खिल गए. ओजस और उस के दोस्त भी बहुत खुश थे. दशहरे में खुशियां बांट कर उन्हें अच्छा लग रहा था. अब उन्हें लगने लगा था कि सभी मिल कर कोरोना रूपी बुराई पर विजय प्राप्त कर सकेंगे.

उस के बाद सभी दोस्त खुशीखुशी अपनेअपने घरों को चले गए. ●

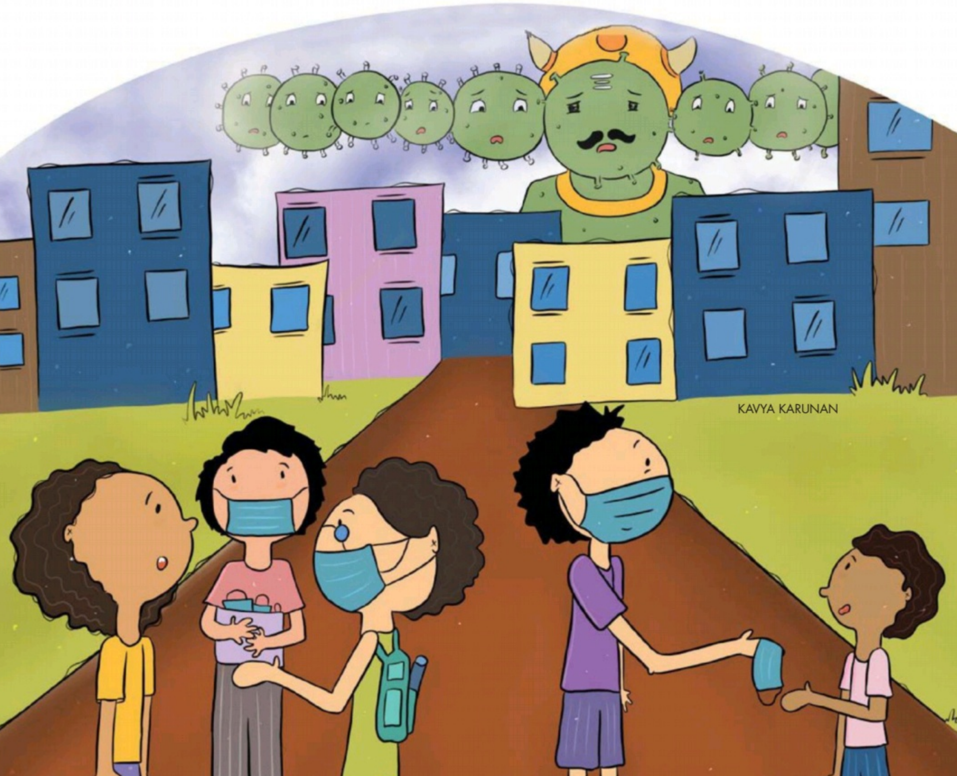
KAVYA KARUNAN

आओ मिल कर गाओ

15 अक्तूबर को ग्लोबल हैंडवाशिंग डे है. इस दिवस का उद्देश्य लोगों को साबुन से हाथ धोने के प्रति जागरूक और प्रेरित करना है. उन में इस आदत को बढ़ावा देना है. साफ हाथ कीटाणुमुक्त होते हैं. बीमारियों से सुरक्षित रहने का यह सब से आसान, प्रभावी और किफायती तरीका है. जब आप हाथ धो रहे हों तो नीचे दिए गाने को गाएं :

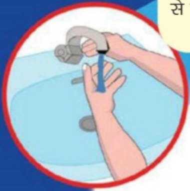

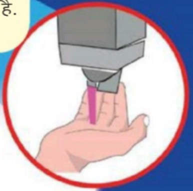

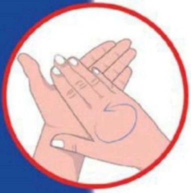

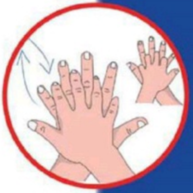

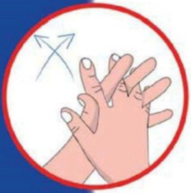

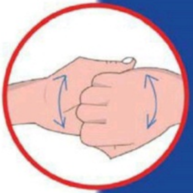

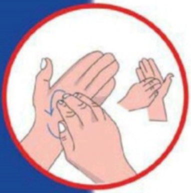

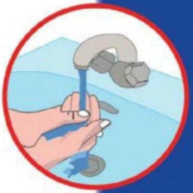

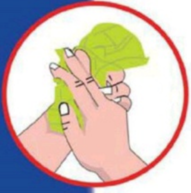

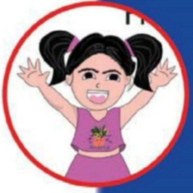

अपने हाथ धोएं

(इस धुन में गाएं, 'मैं गड़गड़ाहट सुनता हूं')

मैं रोज अपने हाथ धोता हूं

मैं रोज अपने हाथ धोता हूं

तुम क्यों नहीं धोते? तुम क्यों नहीं धोते?

अपनी हथेली को आपस में रगड़ो (2)

ऊपर और नीचे,

गोल और गोल

हिलाओ और खुरचो (2)

अपनी उंगलियों को आरपार करो

अपनी उंगलियों को बांधो

तुम एक गायन मंडली में हो (2)

ऊंचा से ऊंचा कूदो (2)

नाखूनों की गंदगी साफ करो (2)

यह तुम्हें नुकसान नहीं करता (2)

साफ पानी से अपने हाथ खंगालो

सूखने के लिए इसे लहराओ

अब कहो, खुशी से हाय.

छिपे चित्र ढूंढ़ें

कराटे कैंप में 10 मुसकराते इमोजी दिए हुए हैं उन्हें ढूंढ़ें.

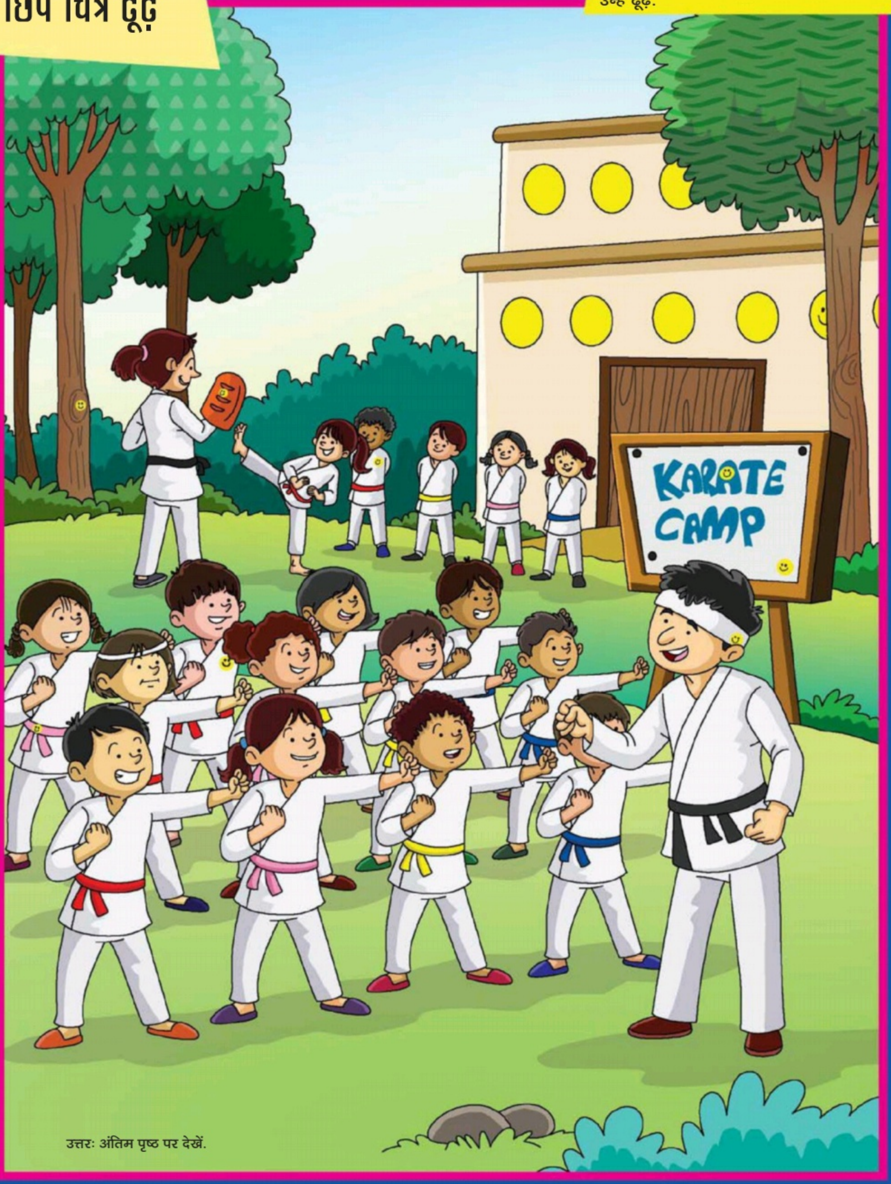
KARATE CAMP

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

चीकू

चित्रकथा : दास

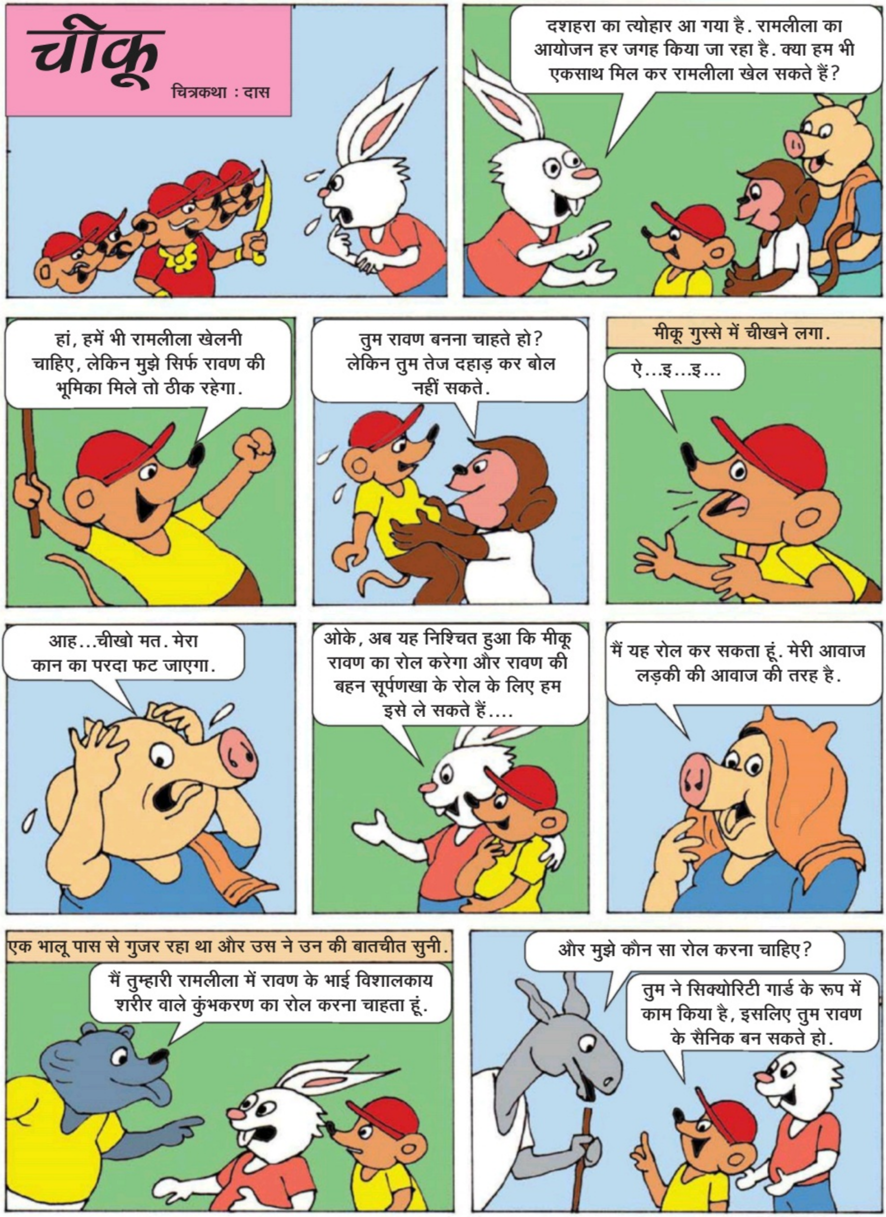
दशहरा का त्योहार आ गया है. रामलीला का आयोजन हर जगह किया जा रहा है. क्या हम भी एकसाथ मिल कर रामलीला खेल सकते हैं?
हां, हमें भी रामलीला खेलनी चाहिए, लेकिन मुझे सिर्फ रावण की भूमिका मिले तो ठीक रहेगा.
तुम रावण बनना चाहते हो? लेकिन तुम तेज दहाड़ कर बोल नहीं सकते.
मीकू गुस्से में चीखने लगा.
ऐ...इ...इ...
आह...चीखो मत. मेरा कान का परदा फट जाएगा.
ओके, अब यह निश्चित हुआ कि मीकू रावण का रोल करेगा और रावण की बहन सूर्पणखा के रोल के लिए हम इसे ले सकते हैं....
मैं यह रोल कर सकता हूं. मेरी आवाज लड़की की आवाज की तरह है.
एक भालू पास से गुजर रहा था और उस ने उन की बातचीत सुनी.
मैं तुम्हारी रामलीला में रावण के भाई विशालकाय शरीर वाले कुंभकरण का रोल करना चाहता हूं.
और मुझे कौन सा रोल करना चाहिए?
तुम ने सिक्योरिटी गार्ड के रूप में काम किया है, इसलिए तुम रावण के सैनिक बन सकते हो.

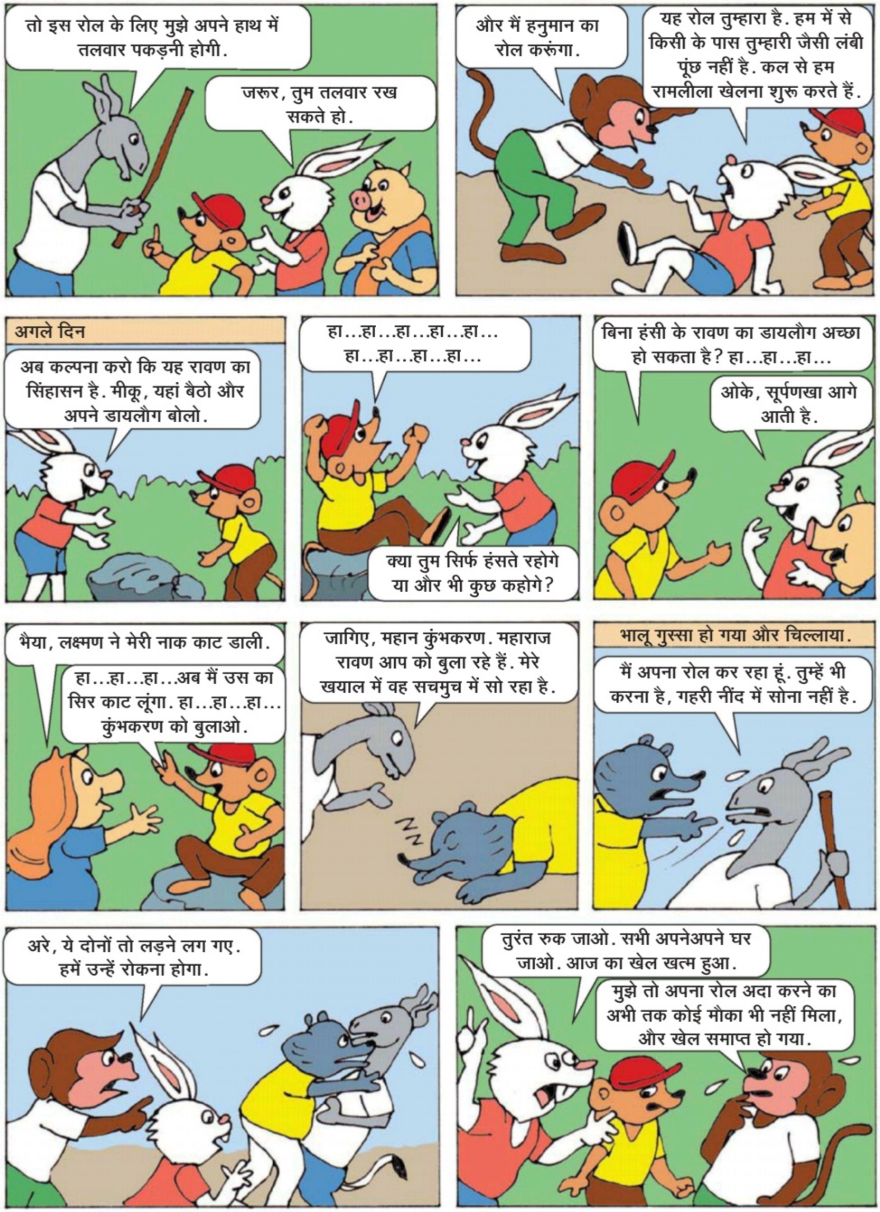
तो इस रोल के लिए मुझे अपने हाथ में तलवार पकड़नी होगी.
जरूर, तुम तलवार रख सकते हो.
और मैं हनुमान का रोल करूंगा.
यह रोल तुम्हारा है. हम में से किसी के पास तुम्हारी जैसी लंबी पूंछ नहीं है. कल से हम रामलीला खेलना शुरू करते हैं.
अगले दिन
अब कल्पना करो कि यह रावण का सिंहासन है. मीकू, यहां बैठो और अपने डायलौग बोलो.
हा…हा…हा…हा…हा… हा…हा…हा…हा…
क्या तुम सिर्फ हंसते रहोगे या और भी कुछ कहोगे?
बिना हंसी के रावण का डायलौग अच्छा हो सकता है? हा…हा…हा…
ओके, सूर्पणखा आगे आती है.
भैया, लक्ष्मण ने मेरी नाक काट डाली.
हा…हा…हा…अब मैं उस का सिर काट लूंगा. हा…हा…हा… कुंभकरण को बुलाओ.
जागिए, महान कुंभकरण. महाराज रावण आप को बुला रहे हैं. मेरे खयाल में वह सचमुच में सो रहा है.
भालू गुस्सा हो गया और चिल्लाया.
मैं अपना रोल कर रहा हूं. तुम्हें भी करना है, गहरी नींद में सोना नहीं है.
अरे, ये दोनों तो लड़ने लग गए. हमें उन्हें रोकना होगा.
तुरंत रुक जाओ. सभी अपनेअपने घर जाओ. आज का खेल खत्म हुआ.
मुझे तो अपना रोल अदा करने का अभी तक कोई मौका भी नहीं मिला, और खेल समाप्त हो गया.

मौंस्टर कूकीज

द्वारा-रुचि भटनागर माथुर

- एक कप छाना हुआ आटा
- 1/2 कप बढ़िया बादाम
- 1/4 चम्मच बेकिंग सोडा
- 1/2 कप मक्खन
- 4 बड़े चम्मच गरम पानी में 1 बड़ा चम्मच चिया सीड्स 10 मिनट तक भिगोएं..
- 1/2 कप ओट्स
- 3/4 चम्मच बेकिंग पाउडर
- 1/2 कप गुड़
- 1 चम्मच दालचीनी
- दूध, अगर जरूरत हो तो.

वयस्क ऐसा करें : ओवन को पहले 175 डिग्री सेंटीग्रेड पर गरम कर लें. बेकिंग ट्रे पर पार्चमेंट पेपर का अस्तर चढ़ा दें.

ऐसे बनाएं :

1. एक कटोरी में गुड़ और मक्खन को तब तक फेंटते रहें जब तक कि यह अच्छी तरह से मिल न जाए.

2. सभी सूखी सामग्री को इस में मिलाएं और स्पैचुला यानी लेपनी से इसे धीरेधीरे मिलाएं.

3. अगर लोई का मिश्रण भुरभुरा हो तो एक बड़ा चम्मच दूध मिलाएं ताकि यह मुलायम हो जाए.

4. लोई को 12 से 14 समान हिस्सों में बांट दें. इसे बौल की तरह रोल कर लें, फिर इसे चपटा करें और एक ट्रे में रख दें.

5. कूकीज को सजाने के लिए जैम्स, खाने योग्य शुगर आइज यानी मिस्री और नट्स इस में मिला दें.

6. इसे 15 से 20 मिनट तक पकाएं जब तक कि ये सुनहरे रंग के न हो जाएं. कूकीज को ओवन से बाहर निकाल लें.

7. कूकीज के ठंडा हो जाने से पहले इस में स्वादिष्ठ मिठाई सावधानीपूर्वक मिला दें.

8. इस हैलोवीन पर मौंस्टर कूकीज का लुफ्त लें.

फोटोग्राफी- रुचिस आर्टिसनल के सौजन्य से -

रुचि भटनागर माथुर रुचिस आर्टिसनल बेक की मालकिन है. उन्होंने बच्चों के लिए स्वादिष्ठ रेसिपी डैवेलप की हैं.

पीहू की बुद्धिमानी

कहानी ● डा. के. रानी

झिंगो जेबरा जंगल में हमेशा सुबह की सैर पर जाता था और यह उस की वर्षों की दिनचर्या थी. वह छड़ी उठाता और घर से टहलने निकल पड़ता. झिंगो अकेले ही टहलना पसंद करता था. इस समय बहुत सारे बनवासी सुबह की सैर कर रहे होते. सच बात तो यह थी कि कोई भी चमकू का साथ पसंद नहीं करता था. वह थोड़ा सा सनकी था. पता नहीं कब कौन सी बात उस के मुंह से निकल जाए और वह उसी का तिल का ताड़ बना दे. इसी वजह से सब उस से दूरी बना करररहते थे.

सैर करते हुए अकसर उस की मुलाकात ग्रैसी गोरिल्ला से हो जाती थी. वह स्वभाव से बहुत सरल था. वह वन के सभी निवासियों की इज्जत करता था. झिंगो के बारे में कोई क्या कहता है, इस से उसे कोई मतलब न था. वह हमेशा झिंगो से गर्मजोशी से मिलता था.

एक दिन सुबह ग्रैसी अपने दोस्त रैंचो गैंडे के साथ टहल रहा था. संयोग से आज बहुत दिनों बाद ग्रैसी की उस से भेंट हुई थी. वे बातें साझा कर रहे थे. तभी ग्रैसी की नजर सामने से आते हुए झिंगो पर पड़ी. लेकिन ग्रैसी को देख कर झिंगो का मूड खराब हो गया. वह पीछे लौटा और बोला, ‘‘तुम दोनों मुझे देख कर हंस क्यों रहे थे?’’

‘‘हम आप को देख कर नहीं हंस रहे थे, हम तो आपस में बातें करते हुए हंस रहे थे. हम ने आप का जिक्र बिलकुल नहीं किया,’’ ग्रैसी ने स्पष्ट किया.

‘‘तुम झूठ बोल रहे हो,’’ झिंगो ने कहा.

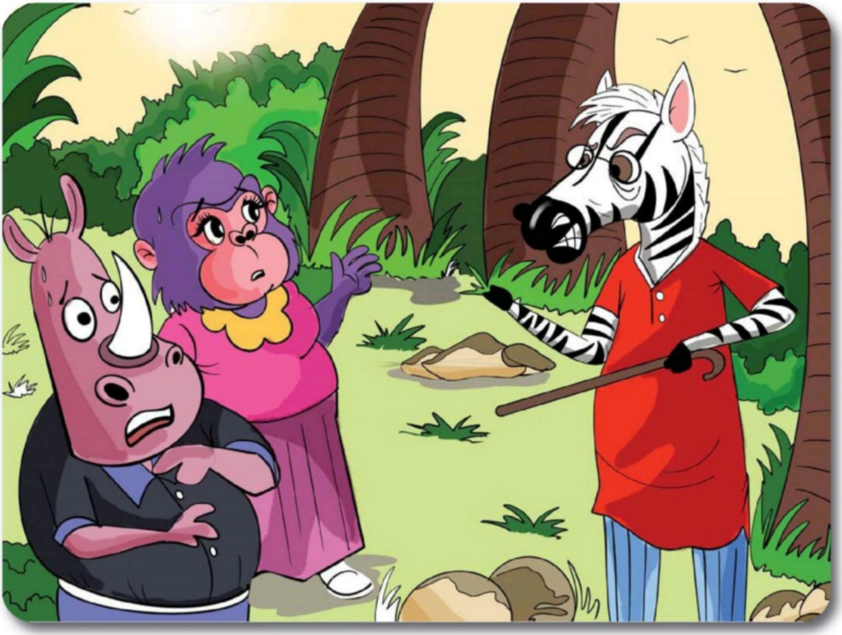

''मैं झूठ क्यों बोलूंगा?'' ग्रैसी बोला.

''मुझे पता है, तुम रोज मेरा मजाक बनाने के बहाने ढूंढ़ते रहते हो,'' झिंगो बोला.

''ऐसी कोई बात नहीं है झिंगो. यदि कोई गलती हो गई हो तो माफ कर दीजिए, ग्रैसी उस से पीछा छुड़ाने के लिए बोला.

''फिर कभी ऐसी गलती की तो मैं तुम्हें छोड़ूंगा नहीं,'' इतना कह कर झिंगो आगे बढ़ गया. ग्रैसी सदमे में था कि यह क्या हो गया?

वह तो रोज ही उन्हें गुडमौर्निंग करता था. आज उसे दोस्त के साथ देख कर पता नहीं वह क्यों भड़क गया? अब उसे समझ में आ गया था कि वन के प्राणी झिंगो का साथ पसंद क्यों नहीं करते? उस दिन के बाद ग्रैसी ने उस रास्ते से जाना छोड़ दिया, जिधर से झिंगो निकलता था.

अगले दिन टहलने के बाद झिंगो रास्ते में एक बड़े से नीम के पेड़ के नीचे रुका, जिस पर कई पक्षियों के घोंसले थे. पीहू तोता भी उसी पेड़ के एक कोटर में अपने परिवार के साथ रहता था. पीहू बच्चों के नाश्ते के लिए फल ले कर आया था. उस के परिवार के सभी सदस्यों ने आराम से अपने कोटर के सामने पेड़ की डाल पर बैठ कर फल खाए, लेकिन खाते समय अमरूद के कुछ छिलके उन की चोंच से नीचे गिर रहे थे. अचानक झिंगो को लगा कि उस के ऊपर कुछ गिर रहा है. उस ने अपने सिर पर हाथ फेरा तो उसे अमरूद के टुकड़े दिखाई दिए. गुस्से के मारे वह आगबबूला हो गया. उस ने ऊपर देखा. पीहू अपने परिवार के साथ बैठ कर आराम से फल खा रहा था. झिंगो ने एक पत्थर उठा कर उन के ऊपर फेंका.

शुक्र था कि पत्थर किसी को लगा नहीं. वे सब फड़फड़ा कर उड़ गए. उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि अचानक क्या हो गया? नीचे झिंगो को देख कर सब ने राहत की सांस ली और वे सब अपने कोटर के सामने वाली डाल पर आ गए.

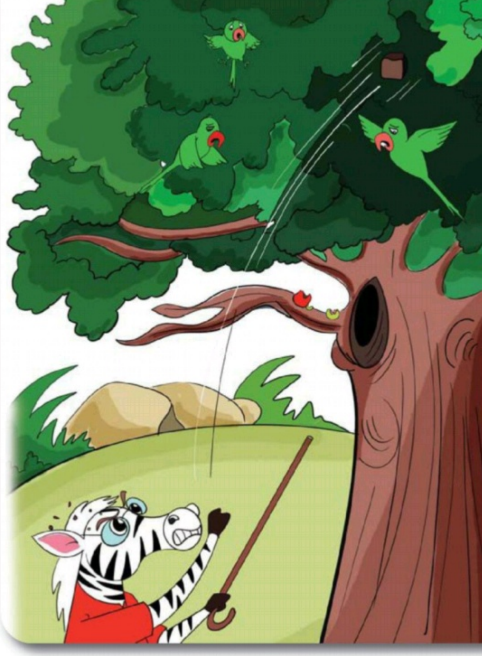

झिंगो जोर से चिल्लाया, ''क्या तुम सभी अंधे हो? जो सब मिल कर मुझ पर गंदगी नीचे फेंक रहे हो.''

''अंकल, हम आप पर कचरा नहीं फेंक रहे हैं, हम तो अपना नाश्ता कर रहे हैं,'' पीहू ने कहा.

''झूठ बोलते हो तुम. यह देखो, मेरे सिर के ऊपर अभी तक तुम्हारे झूठे अमरूद के टुकड़े पड़े हुए हैं,'' झिंगो फिर चिल्लाया. ''माफी चाहते हैं, गलती से गिर गए होंगे. हम तो यहां पर रोज की तरह सुबह का नाश्ता कर रहे थे,'' पीहू ने उत्तर दिया.

''तुम्हें कोई और जगह नहीं मिली नाश्ता करने के लिए,'' झिंगो उन पर फिर चिल्लाया.

''अंकल, यहीं मेरा कोटर है. हम रोज यहीं पर नाश्ता करते हैं,'' पीहू ने उसे शांति से समझाया.

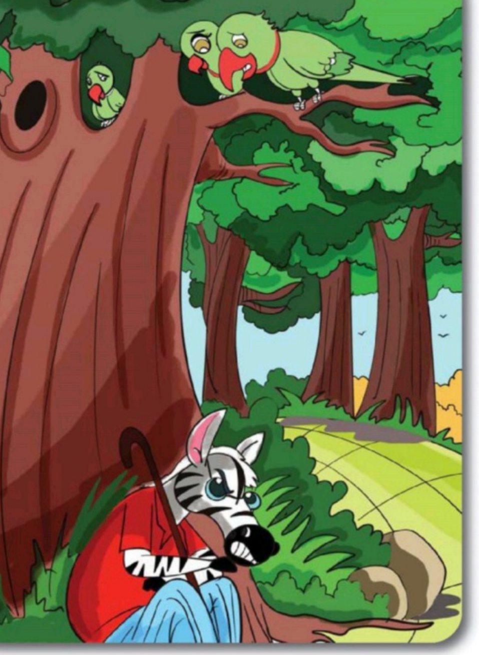

"इस का मतलब मैं ने यहां आ कर गलती की,'' झिंगो ने पूछा.

''नहीं अंकल, गलती हमारी है. हम ने आप को देखा नहीं. बातें करने की वजह से हमारा ध्यान नीचे नहीं गया वरना इतनी बड़ी गलती कभी नहीं होती,'' पीहू ने उसे शांत करने की कोशिश की.

''बड़ीबड़ी बातें मत करो, तुम सोचते हो वनवासी तुम्हें बहुत विद्वान समझते हैं तो मैं भी तुम्हारी बातों के झांसे में आ जाऊंगा,'' झिंगो ने कहा.

''हमें माफ कर दो. हम से गलती हो गई. अब हम इस का ध्यान रखेंगे कि दोबारा ऐसी गलती न हो.''

''ध्यान तो तुम रखोगे ही, अब मैं हर सुबह यहां आ कर देखूंगा कि तुम कैसे अपना नाश्ता करते हो?'' इतना कह कर झिंगो वहीं पर आराम से बैठ गया.

पीहू को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे? क्योंकि उसे पता था झिंगो कभीकभी सनक जाता है.

पीहू और उस का परिवार उड़ कर दूसरी डाल पर आ गए और नाश्ता करने लगे, जबकि झिंगो बहुत देर तक वहीं बैठा रहा और उस के बाद वहां से चला गया.

दूसरे दिन से रोज वह इसी समय वहां आ कर बैठ जाता. पीहू के लिए यह एक नई मुसीबत खड़ी हो गई थी. उन के नाश्ते के समय झिंगो ठीक उसी डाल के नीचे बैठ जाता, जिस पर बैठ कर उस का पूरा परिवार एकसाथ नाश्ता करता था. झिंगो की दहशत ऐसी हो गई थी कि वे हर बार कोटर से बाहर निकलते समय नीचे जरूर देख लेते कि कहीं कोई वहां बैठा तो नहीं है.

पीहू और उस के परिवार को अब हर दिन नाश्ते के लिए उड़ कर सामने की दूसरी डाल पर बैठना पड़ रहा था. पीहू को समझ नहीं आ रहा था कि झिंगो से अपना पीछा कैसे छुड़ाए?

रोज सुबह वह टहल कर आता और इत्मीनान से पेड़ के नीचे बैठ जाता. यदि उस पर खाना गिरता तो वह नीचे से पत्थर उछाल देता.

एक दिन पीहू की पत्नी ने कहा, ''हमें इस जगह से अपना ठिकाना बदल देना चाहिए.''

''क्यों?'' पीहू ने पूछा.

''दिख तो रहा है कितनी बड़ी मुसीबत नीचे बैठी है. कभी गलती से कुछ नीचे गिर गया तो हमारी मुसीबत खड़ी हो जाती है.''

''तुम बच्चों का ध्यान रखना. मैं उस से निबटने का रास्ता निकालता हूं. हमें किसी की मदद लेनी चाहिए, लेकिन झिंगो के खिलाफ कोई भी कुछ करने को तैयार नहीं होगा, क्योंकि वह उसी के पीछे पड़ जाएगा,'' पीहू ने पत्नी को समझाया.

''तुम ठीक कहते हो. जल्दी कोई उपाय ढूंढ़ो नहीं तो हमारे लिए बहुत बड़ी मुसीबत खड़ी हो जाएगी. क्या पता यह कब पत्थर फेंक कर हम में से किसी को नुकसान पहुंचा दे,'' पीहू की पत्नी बोली.

बहुत देर तक नीम के पेड़ के नीचे बैठने के बाद झिंगो वहां से चला गया. उस के जाते ही पीहू अपने कोटर से कुछ ऊपर एक लंबी सूखी डाल के ठूंठ को देखने लगा, वह सूख कर सड़ गया था और जरा से हिलने पर नीचे गिर सकता था. पीहू ने सब की नजर बचा कर उसे अपनी चोंच से धीरेधीरे हिलाना शुरू कर दिया. हफ्तेभर के अंदर उस ने उस ठूंठ का काफी हिस्सा ढीला कर दिया था. अब वह जरा से झटके से कभी भी टूट कर नीचे गिर सकता था. झिंगो रोज नीम के पेड़ के नीचे आता और घंटों बैठ कर चला जाता.

एक दिन सुबह जब झिंगो आया और वन की सैर कर के नीम के पेड़ के नीचे बैठ गया, तो ऊपर पेड़ पर बैठा पीहू उस का इंतजार कर रहा था. आज उस ने लकड़ी के सूखे ठूंठ पर एक डोरी बांध रखी थी. उस के आते ही पीहू डोरी का दूसरा छोर अपनी चोंच से पकड़ कर नीचे की डाल पर बैठ गया. कुछ ही देर में उस ने वह डोरी पूरे जोर से खींच दी. उस के खींचते ही वह सड़ा हुआ ठूंठ नीचे गिर पड़ा. इतनी देर में पीहू उड़ कर अपने कोटर में चला गया.

धड़ाम से झिंगो के ऊपर लकड़ी का सड़ा हुआ ठूंठ गिरा. उसे समझ नहीं आया कि अचानक यह क्या हुआ? उस की चोट से थोड़ी देर के लिए उस का सिर घूम गया. थोड़ी देर में जब वह जरा संभला तो उस ने इधरउधर देखा. पेड़ पर उसे कोई नजर नहीं आया. सामने उसे एक पुरानी सड़ी हुई लकड़ी का ठूंठ पड़ा हुआ दिखाई दिया. इस की चोट से उस के सिर पर एक बड़ा सा गूमड़ निकल आया था. उसे समझ नहीं आया कि किस ने उस पर वार किया था?

वह जानता था कि तोते के बस का तो यह सब नहीं था. वह सोच ही रहा था कि तभी उधर से ग्रैसी गुजरा. उस के सिर पर गूमड़ देख कर उस से न रहा गया. उस ने पूछा, ''क्या हुआ चाचा?''

''पता नहीं, किस ने इसे मेरे सिर पर दे मारा,'' झिंगो ने कहा.

''यह तो सड़ी हुई सूखी लकड़ी है. अपने आप ही पेड़ से गिर गई होगी,'' ग्रैसी ने कहा और अपने बैग से रूमाल निकाला तथा झिंगो को थमा दिया और कहा, ''इस से अपना गूमड़ दबाओ, थोड़ी देर में यह बैठ जाएगा.''

झिंगो ने उस के हाथ से रूमाल लिया और बोला, ''धन्यवाद.''

वह वहां से उड़ कर घर की ओर चल पड़ा. गुस्से के मारे वह बड़बड़ा रहा था. उस ने पलट कर एक बार फिर पेड़ की ओर देखा. पेड़ पर अभी भी ऐसे कई पुराने ठूंठ थे जो कभी भी नीचे गिर सकते थे.

उस दिन के बाद से झिंगो ने उधर जाना छोड़ दिया. पीहू और उस के परिवार ने राहत की सांस ली. पीहू को समझदारी से इतनी बड़ी मुसीबत से छुटकारा मिल गया था. ●

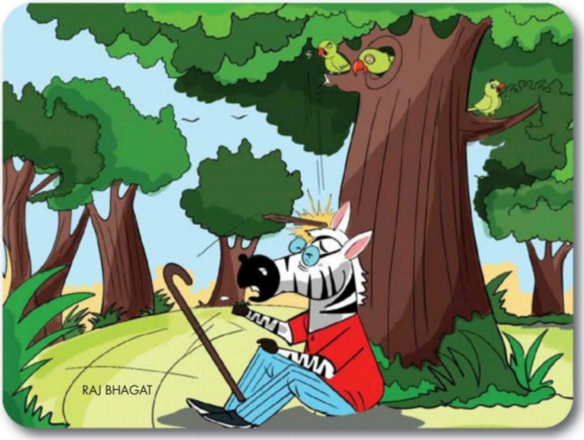

हैलोवीन डे

31 अक्तूबर को हैलोवीन डे है. यह एक ऐसा दिन है जब हर कोई कौस्ट्यूम यानी नाटक के लिए पहना जाने वाला कपड़ा पहनता है. रुचिका भी खुद को जादूगर दिखाने के लिए जादूगर जैसा ही ड्रैस पहनना चाहती है. लेकिन कुछ चीजें खो गई हैं. संकेतो को पढ़िए, चित्र को देखिए और पता कीजिए की कौनकौन सी चीजें खो गई हैं.

संकेत :

- जब तुम कोई शब्द बोलना चाहते हो तो मुझे अपने हाथों में थाम कर अचानक उंगलियों से प्रहार करते हो.
- मैं सफेद हूं, ऊंचाई पर बैठा हूं और रात में कुत्ते की तरह भौंभौं कर चीखता हूं.
- मैं गोल हूं, मेरे से हो कर जादूगर साफसाफ देख सकता है.
- मैं कपड़े का एक टुकड़ा हूं जिसे जादूगर अपने सिर पर पहनता है, जिस का रंग लबादे के रंग से मिलताजुलता है.

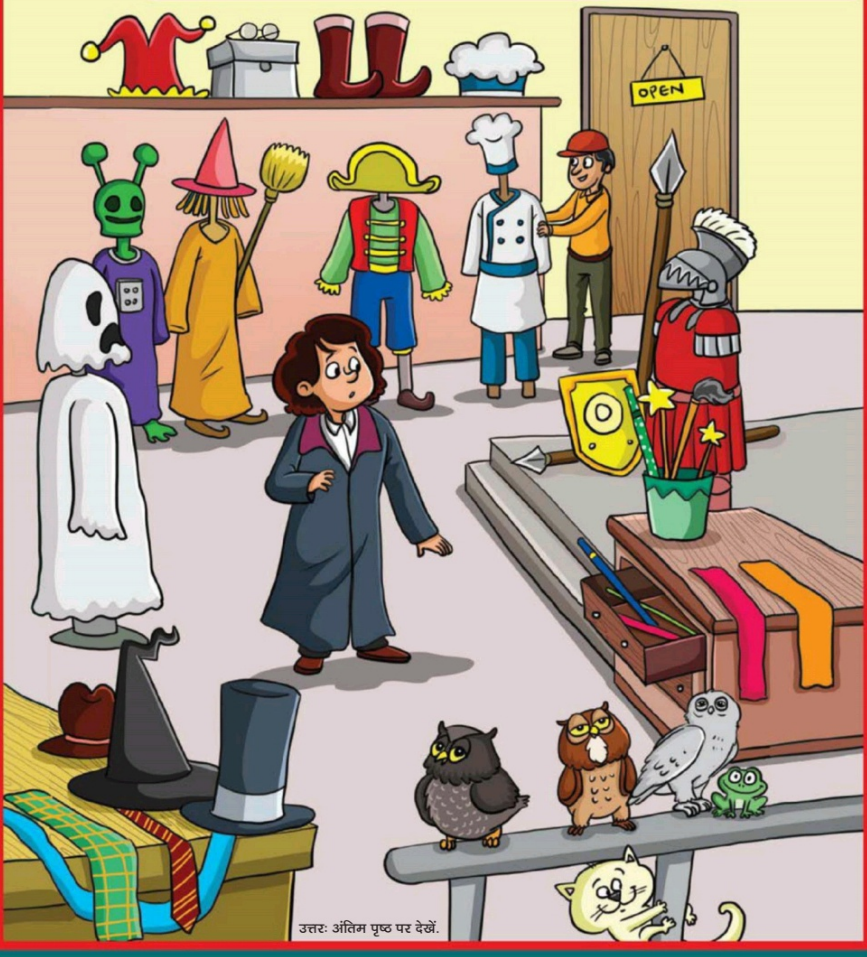

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

बिंदु मिलाओ

अंकों के अनुसार बिंदुओं को मिलाएं और चित्र पूरा करें.

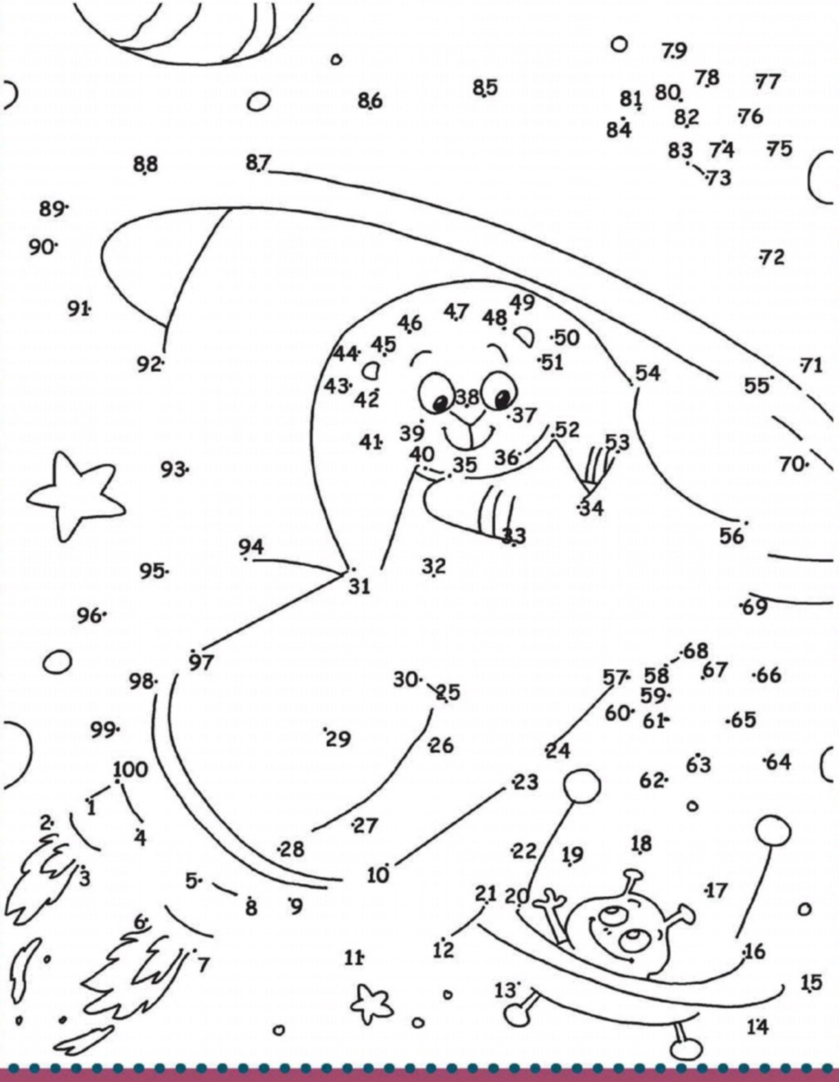
1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27
28
29
30
31
32
33
34
35
36
37
38
39
40
41
42
43
44
45
46
47
48
49
50
51
52
53
54
55
56
57
58
59
60
61
62
63
64
65
66
67
68
69
70
71
72
73
74
75
76
77
78
79
80
81
82
83
84
85
86
87
88
89
90
91
92
93
94
95
96
97
98
99
100

चित्र पूरा करें

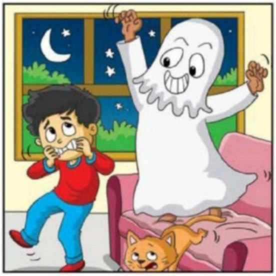

इस चित्र में कुछ हिस्से खाली रह गए हैं. चित्र को देखें, उन्हें पूरा करें और फिर इन में रंग भरें.

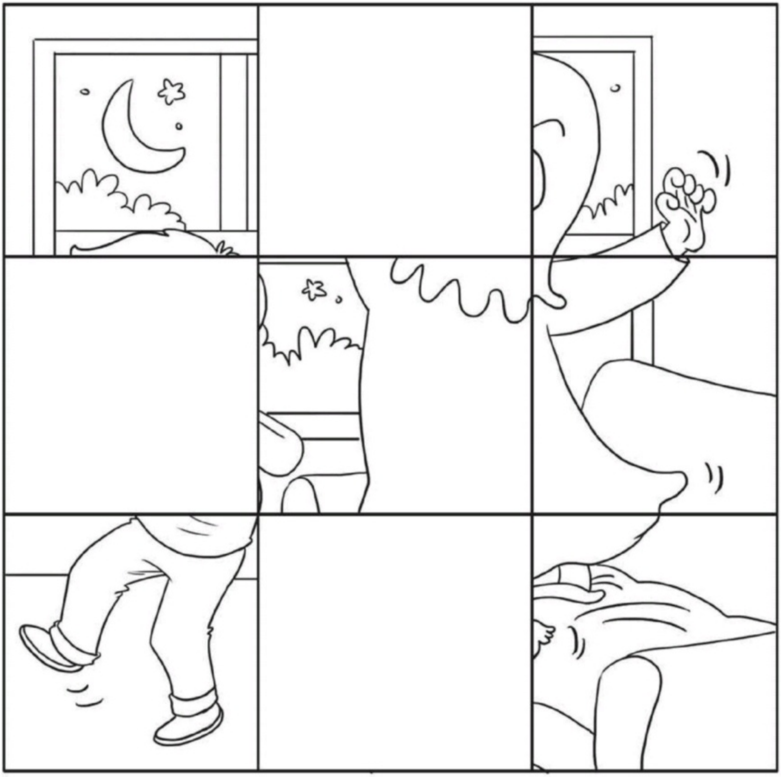

डरावना भूत

कहानी ● इलिका प्रिय

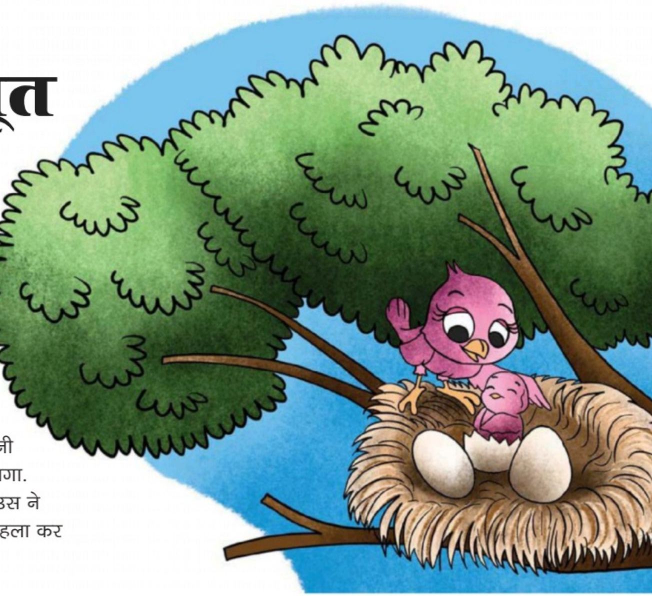

मिनी ने देखा अंडों में दरार पड़ रही है तो वह मारे खुशी से उछल पड़ी.

''मेरे अंडों से बच्चे निकल रहे हैं,'' उस ने पड़ोसी चिड़ियों को चिल्ला कर बताया. कुछ ही देर में एक चूजा खोल से बाहर निकल आया और अपनी लाल चोंच से अपनी मां मिनी चिड़िया की चोंच को छूने लगा. मिनी की खुशी का ठिकाना न रहा. उस ने भी अपनी नन्हीं जान को पंखों से सहला कर प्यार किया.

वसंत ऋतु चिड़ियों के अंडों से बच्चों के बाहर आने का मौसम था. सारे पेड़ों की डालों से नन्हीनन्ही गौरैयों की चींचीं की आवाज सुनाई पड़ रही थी. आसमान में उन के मातापिता बच्चों के खाने के जुगाड़ में जुटे हुए थे. चारों ओर हलचल थी. सभी मातापिता अपने बच्चों को बहुत प्यार करते थे. मिनी को भी अपनी नन्ही बिन्नी बहुत प्यारी थी. वह जब भी अपनी पड़ोसी लिली चिड़िया और उस की नन्ही बच्ची चीची को देखती तो उसे लगता वह अपनी बिन्नी को दूसरों से ज्यादा प्यार करती है.

जब मिनी और लिली दाना चुगने जातीं तो उन के बच्चे चीची और बिन्नी आपस में बातें करते. एक दिन बिन्नी ने कहा, ''चीची, देखो तो जरा, हमारे पंख निकल आए हैं. अब हमें इन डालों पर फुदकना चाहिए.''

''सच, तो चलो न फुदकते हैं,'' चीची भी चहक पड़ी. फिर क्या था, दोनों घोंसले से बाहर निकल आए.

''दोस्त, देखो तो कितना मजा आ रहा है. मैं तो समझती थी कि बस घोंसला ही पूरी दुनिया है. पर देखो तो जरा, कितना सुंदर नजारा है यहां,'' चीची उछलती हुई बोली. दोनों ने ऊंची डालियों से नीचे हरेभरे घास और रंगबिरंगे फूलों का नजारा देखने का मजा लिया.

दोनों मजे से एक डाल से दूसरी डाल में फुदक रहे थे कि तभी मिनी और लिली आ गई. चीची को देख कर लिली काफी खुश हुई, पर बिन्नी को देख कर मिनी उदास हो गई.

''अरे, तुम घोंसले से बाहर आ कर क्या कर रही हो?'' मिनी डांटती हुई बोली.

''देखो न मां, हम लोग अब फुदकना सीख गए हैं. बड़ा मजा आ रहा है,'' बिन्नी खुश हो कर बोली. उसे लगा मां खुश होंगी, पर मिनी गुस्सा करती हुई बोली, ''अभी तुम बहुत छोटी हो. तुम्हें घोंसले के अंदर ही रहना है.''

''पर मां मुझे फुदकने में बड़ा मजा आ रहा है,''

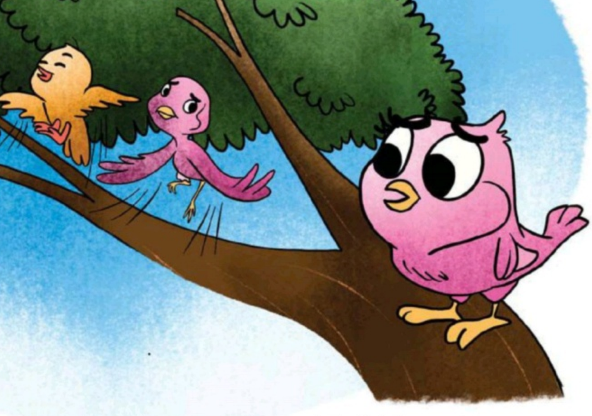

बिन्नी ने मासूमियत से कहा, तो मिनी ने फिर डांट दिया. अब लिली बोल पड़ी, ''अरे, मिनी बहन, गुस्सा क्यों करती हो. बच्चे सच में बड़े हो रहे हैं. जब फुदकेंगे तभी तो उड़ना भी सीखेंगे.'' उसे डर था कि कहीं यों फुदकते हुए उन्हें किसी जानवर ने देख लिया तो वह उन के पीछे न पड़ जाए, कहीं बैलेंस बिगड़ा तो नीचे न गिर जाएं. कहीं फुदकते हुए दूर चले गए तो रास्ता न भूल जाएं. इसलिए उस ने हामी नहीं भरी.

मिनी हर दिन मना कर के जाती, पर बिन्नी नहीं मानती. वह चीची के साथ घूमने लगती. मिनी सोच में पड़ गई कि आखिर क्या किया जाए कि वह घोंसले से बाहर निकलने से डरे. अचानक उसे एक उपाय सूझा, 'भूत, एक डरावना भूत. हां, यह सही उपाय है.'

अगले दिन मिनी ने कहा, ''बिन्नी, तुम सोचती होगी कि मैं तुझे बाहर जाने से क्यों मना करती हूं, क्योंकि मुझे डर है कि तुम्हें कहीं भूत न पकड़ ले.''

''भूत, यह क्या होता है मां?'' बिन्नी ने बड़ी मासूमियत से पूछा.

मिनी चालाकी से बोली, ''यह एक डरावनी जादुई चीज है. उस के बड़ेबड़े दांत हैं. उस के न तो पैर है और न ही पंख. लेकिन वह हवा में उड़ सकता है और किसी को भी पकड़ सकता है, उस के पास जादुई शक्तियां हैं और वह किसी को भी खा सकता है,'' मिनी की डरावनी बातें सुन कर बिन्नी बुरी तरह डर गई.

मिनी खुश हुई. उसे विश्वास हो गया कि बिन्नी अब घोंसले से बाहर नहीं निकलेगी और जानवरों से सुरक्षित रहेगी. बात सच थी. उस दिन के बाद बिन्नी अपने घोंसले से बाहर नहीं निकलती, चाहे चीची उसे कितना ही बुला ले. चीची ने फुदकफुदक कर अच्छे से फुदकना सीख लिया था. उस ने तो अब छोटीछोटी उड़ानें भरनी सीख लीं.

एक दिन मिनी ने छोटी गौरैया को आकाश में उड़ते हुए देखा, 'अरे यह क्या? नन्ही गौरैया आसमान में उड़ान भर रही है.

''इन बच्चों ने कब उड़ना सीखा?'' मिनी हैरान थी. उन नन्हें गौरैयों में चीची भी थी. मिनी की बात सुन कर लिली मुसकराई और बोली, ''डालियों में फुदकतेफुदकते मेरी चीची ने उड़ाना सीख लिया है.''

''पर मेरी बिन्नी तो उड़ना नहीं जानती,'' मिनी उदास हो कर बोली.

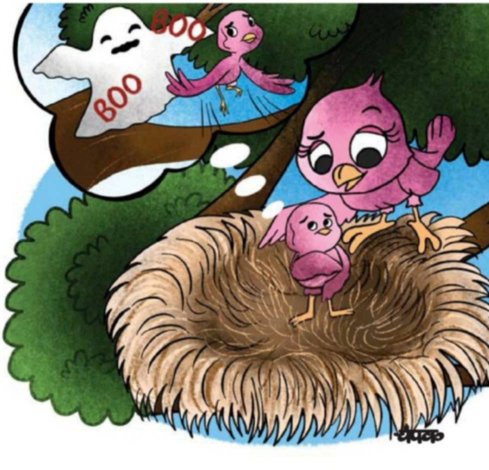

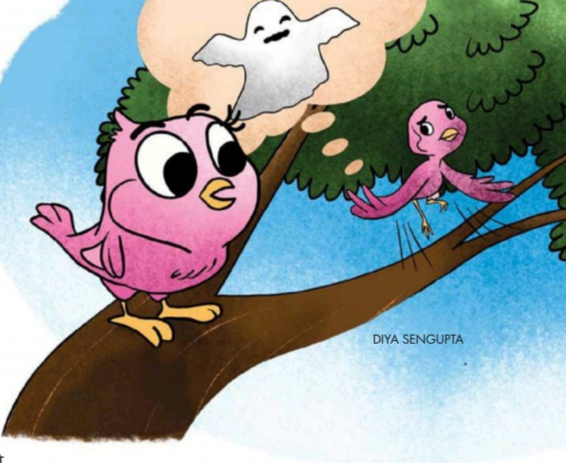
DIYA SENGUPTA

‘‘तुम तो अपनी बिन्नी को कभी फुदकने ही नहीं देती, वरना आज वह भी उड़ान भर रही होती,’’ लिली झिड़की देती हुई बोली.

‘मिनी ने उस की ओर आश्चर्य से देखा और कहा,’ ‘‘मैं तो उस की सुरक्षा के लिए मना कर रही थी.’’

‘‘और तुम्हारी बेवजह की सुरक्षा ने उसे कमजोर बना दिया है. उम्र के साथसाथ हर चीज जरूरी होती है. बिना रिस्क का हम कुछ सीख सकते हैं क्या भला? हमारे बच्चे इसी तरह तो खतरों से बचना सीखते हैं. तुम ने उसे कभी कोई मौका ही नहीं दिया,’’ लिली बोली.

‘‘ओह, यह बात है. तब तो मैं अपनी बिन्नी को भी उड़ना सिखाऊंगी,’’ मिनी को अपनी गलती का एहसास हुआ. उस ने बिन्नी को घोंसले से बाहर जा कर फुदकने को कहा, मगर यह क्या? मां के कहने पर बिन्नी बाहर तो गई पर दो ही मिनट में वापस घोंसले में आ गई.

‘‘मां, बाहर भूत हो सकता है. मुझे डर लग रहा है. मैं नहीं जाऊंगी,’’ बिन्नी डरते हुए बोली. मिनी ने बड़ी मुश्किल से उसे समझाया कि बाहर कुछ नहीं है. मिनी के बहुत कहने पर बिन्नी ने अब फुदकना शुरू किया. मगर जब मिनी सामने रहती वह तभी फुदकती, पर सिर्फ एक डाली से दूसरी तक और फिर वापस उसी पर आ जाती थी. लाख समझाने पर भी वह यही कहती, ‘‘मुझे भूत का डर लगता है.’’

बिन्नी की यह बातें सुन कर मिनी को दुख हुआ. लिली जिस ने यह सबकुछ देखा बोली, ‘‘मिनी, तुम ने एक तो उसे कमजोर बनाया और दूसरा झूठी काल्पनिक चीज से उसे डरपोक भी बना दिया. मिनी, हमारे बच्चे खाली कैमरे की तरह होते हैं. उस में तुम जो भरोगी वह उसी के अनुसार तैयार होंगे. देखो, मेरी चीची अंधविश्वासी बातों पर बिलकुल भी विश्वास नहीं करती, क्योंकि मैं ने उसे कभी भी भूतप्रेत, देवीदेवता, जादूटोना के बारे में नहीं बताया. पर जो बताते हैं उन के बच्चे उन चीजों पर विश्वास कर लेते हैं और फिर इस से बाहर आना उन के लिए बहुत मुश्किल होता है. तुम्हें बहुत मेहनत करनी होगी, बिन्नी के मन से डरावने भूत की कल्पना को मिटाने के लिए. पर यदि अभी नहीं मिटाओगी तो वह आजीवन उस कल्पना पर विश्वास कर के एक डरपोक गौरैया बन जाएगी. तुम्हारा यों हताश होना उस के लिए और भी बुरा है.’’

मिनी को अब अपनी दूसरी गलती का एहसास हुआ और तब उस ने लिली से कहा, ‘‘तुम ने मेरी आंखें खोल दीं लिली, वरना मैं ने तो दो गलतियां कर ही ली हैं, तीसरी भी कर बैठती. बिन्नी के मन से भूत का डर न भगा कर, पर अब मैं कुछ भी कर के उस के मन से भूत का डर भगा कर ही दम लूंगी.’’

उस ने तय किया कि अब वह बिन्नी के अंदर का डर जरूर भगाएगी और फिर कभी अंधविश्वासी बातों का डर दिखा कर अपनी बिन्नी को नहीं डराएगी. वह बाकी गौरैयों की तरह अपनी बिन्नी को भी बहादुर, सहनशील और संघर्षशील गौरैया बनाने का सपना देख रही थी. ●

मौंस्टर क्लाज

पलक शाह

स्मार्ट

हैलोवीन का त्योहार आ चुका है, कौस्ट्यूम पहनने का यह सब से बेहतरीन समय है. चार्टपेपर से आप अपना खुद का मौंस्टर क्लाज यानी दैत्य वाले चंगुल बनाएं.

आप को चाहिए : चार्टपेपर, कैंची, रूलर, पैंसिल.

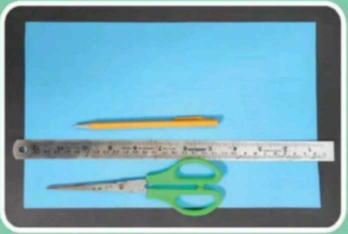

ऐसे बनाएं :

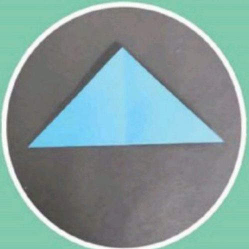

1. क्लाज के नाखून बनाने के लिए 7 सेंटीमीटर माप का एक वर्ग काट लें. इसे त्रिभुज के आकार में मोड़ें.

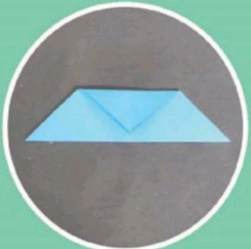

2. त्रिभुज के किनारे को अंदर की ओर मोड़ें जैसा चित्र में दिखाया गया है. मोड़ पर दबाव डालें और फिर इसे खोलें.

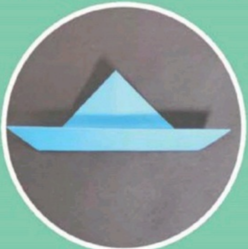

3. त्रिभुज के नीचे के आधे भाग को मोड़ें और इसे एक नाव जैसा आकार दें.

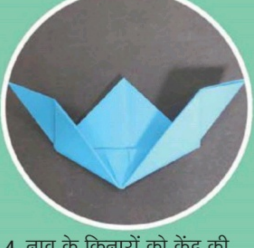

4. नाव के किनारों को केंद्र की ओर मोड़ें जैसा चित्र में दिखाया गया है.

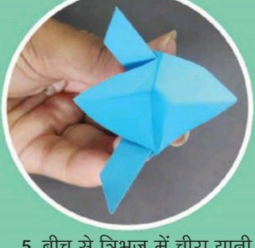

5. बीच से त्रिभुज में चीरा यानी कट लगा कर फाड़ें ताकि यह दोनों किनारों पर फैल जाए.

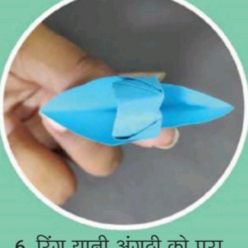

6. रिंग यानी अंगूठी को पूरा करने के लिए दोनों फ्लैप को एकसाथ जोड़ दें.

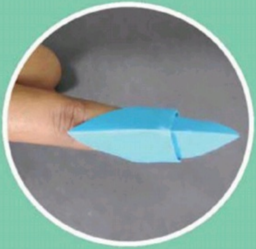

7. अपने हाथ की 10 उंगलियों के लिए इसी तरह 10 और बना लें.

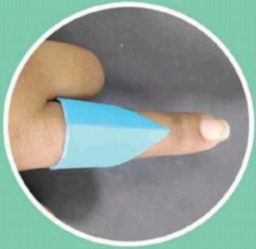

8. क्लाज के आधार यानी बेस को बनाने के लिए 1 से 3 के चरण को फौलो करें. रिंग बनाने के लिए छोरों को मोड़ दें. इसी तरह 10 रिंग बना लें.

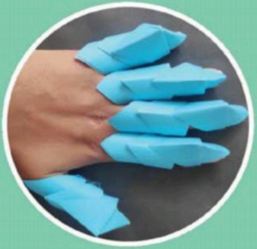

9. हरेक उंगली में बेस को पहन लें और उस के बाद हर उंगली पर 2 क्लाज पहन लें.

अब आप का मौंस्टर क्लाज बन कर तैयार है.

अपने घर पर इसे स्वयं ही बनाने की कोशिश करें. हमें अपनी प्रविष्टि writetochampak@delhipress.in या एक फोटो खींच कर +91 9619587613 पर भेज दें.

वर्ल्ड थ्रिफ्ट डे

31 अक्तूबर को वर्ल्ड थ्रिफ्ट डे यानी विश्व बचत दिवस है. यह दिन लोगों को रुपयों की बचत करने के महत्त्व और बुद्धिमानी से उन्हें खर्च करना सिखाता है. नीचे चित्र को देखिए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

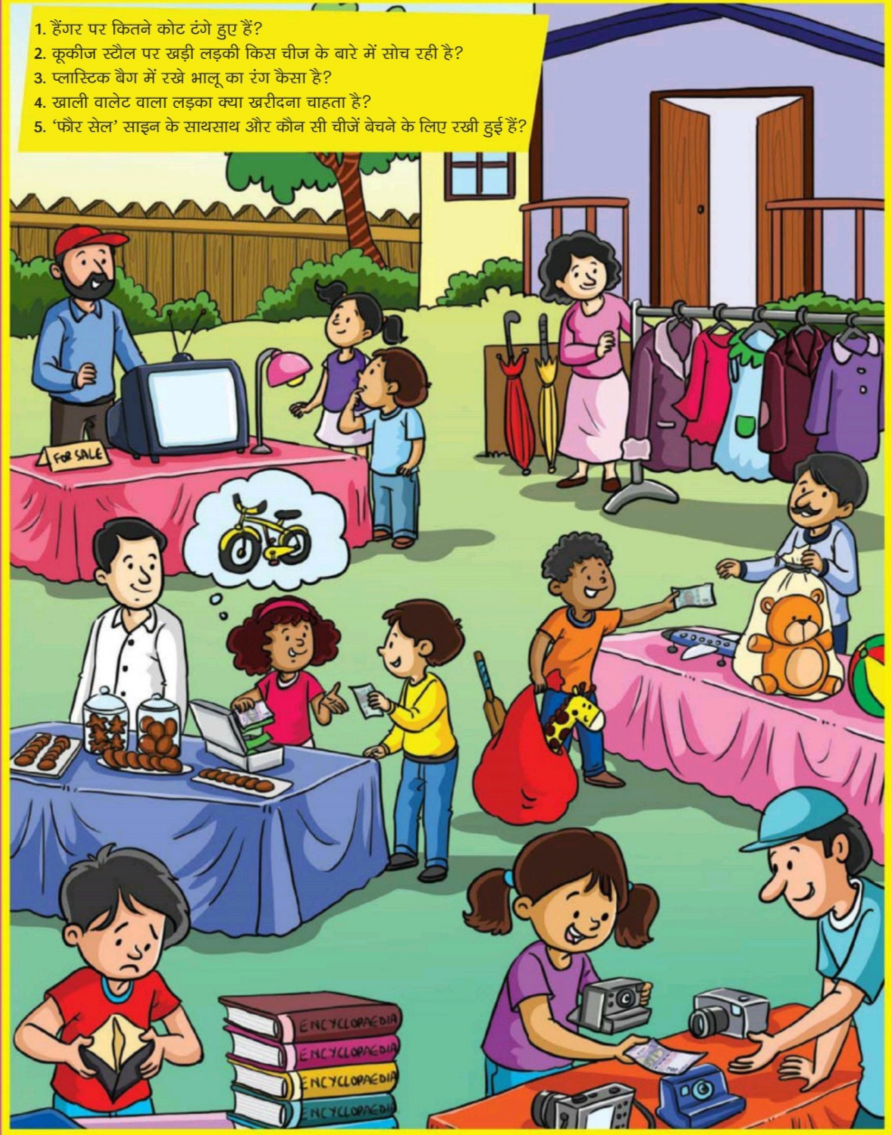

1. हैंगर पर कितने कोट टंगे हुए हैं?
2. कूकीज स्टौल पर खड़ी लड़की किस चीज के बारे में सोच रही है?
3. प्लास्टिक बैग में रखे भालू का रंग कैसा है?
4. खाली वालेट वाला लड़का क्या खरीदना चाहता है?
5. 'फौर सेल' साइन के साथसाथ और कौन सी चीजें बेचने के लिए रखी हुई हैं?

FOR SALE
ENCYCLOPAEDIA
ENCYCLOPAEDIA
ENCYCLOPAEDIA
ENCYCLOPAEDIA

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

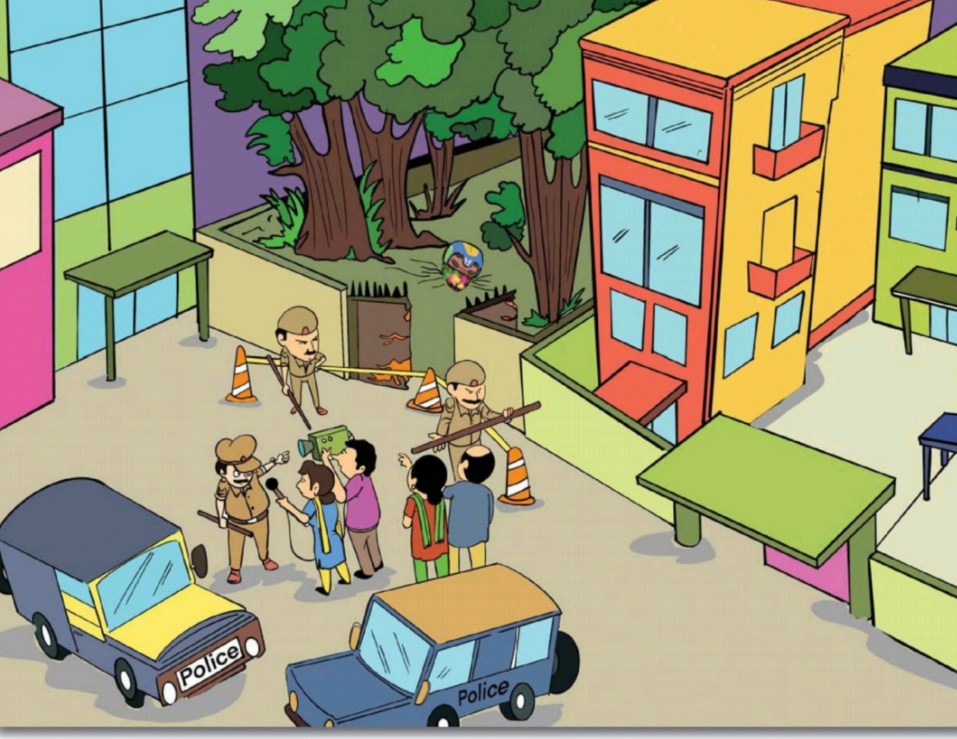

एलियन की हैलोवीन यात्रा

कहानी ● अनिल कुमार जायसवाल

दशहरे का त्योहार नजदीक था, लेकिन सारे इलाके में हड़कंप मचा था. सी व्यू हाउसिंग सोसायटी के निवासियों ने भारी संख्या में सामने के गेट पर इकट्ठा होना शुरू कर दिया था. सोसायटी का जंगल की तरफ वाला गेट सील कर दिया गया था. वहां पुलिस कांस्टेबल गश्त कर रहे थे.

इंस्पैक्टर पीयूष उस क्षेत्र का इंस्पैक्टर था. वह आज सब की नजरों का केंद्र था, क्योंकि उस ने एक एलियन की खोज जो की थी.

इंस्पैक्टर पीयूष ने दावा किया कि उस ने वहां जंगल में एक एलियन को देखा, जो धड़ तक जमीन में धंसा हुआ था. सिर्फ उस का चेहरा ही जमीन से ऊपर था. दूर से देखने पर ऐसा लग रहा था जैसे उस ने एक हैलमेट की तरह कुछ पहन रखा था, कमाल की बात तो यह थी कि उस ने हैलमेट के ऊपर मुंह और नाक को ढकने के लिए मास्क पहना था. यही मास्क चर्चा का विषय बन गया था.

पुलिस ने पूरे इलाके को घेर लिया था और किसी को

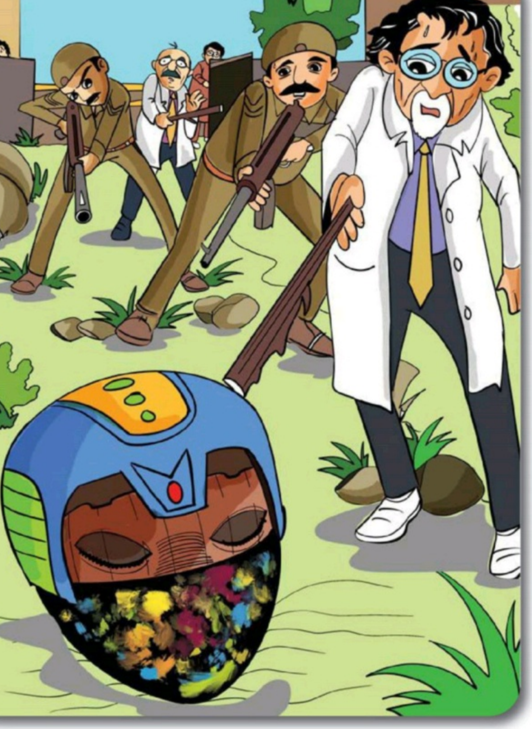

भी उस के पास फटकने की इजाजत नहीं थी. लोग दूर से एलियन को देखने की कोशिश कर रहे थे और कानाफूसी कर रहे थे.

इंस्पैक्टर पीयूष ने लोकल न्यूजपेपर के रिपोर्टर को बुलाया था, जो इस खोज के लिए उस का इंटरव्यू ले रहा था. इंस्पैक्टर पीयूष ने गंभीर हो कर उन के सवालों के जवाब दिए और इन्वेस्टिगेशन के बारे में बताने लगा, ''कल रात बिजली गिरने के बाद श्यामा सोसायटी की एक महिला ने यहां कुछ देखा और उस ने मुझे फोन किया.

''मुझे पता चला कि यह एक एलियन था, जिस ने हमारी तरह मास्क पहना हुआ था. इस से एक बात तो साबित होती है या तो यह जिस ग्रह से आया है वहां भी कोरोना वायरस फैला हुआ है या उन्हें मालूम है कि आजकल धरती पर कोरोना का आतंक है और इस कोरोना के आतंक से बाहरी दुनिया के लोग भी नहीं बच सकते, इसलिए वह पूरी तैयारी के साथ धरती पर आया है. यह भी हो सकता है कि यही एलियन कोरोना को दुनिया में लाया हो. इसलिए अब यह हमारी गिरफ्त में है.''

इंस्पैक्टर पीयूष ने मुख्यालय में इस घटना की सूचना दी थी और वहां से वैज्ञानिकों का एक दल गांव के लिए चल पड़ा था. इंस्पैक्टर मन ही मन प्रसन्न हो रहा था कि इस बार उस का नाम अखबार में छपेगा और इनाम भी मिलेगा. आखिर उस के कारण ही एलियन का पता दुनिया को लगने जा रहा था. सारा श्रेय खुद लेने के लिए इस घटना के असली गवाह को उस ने उस इलाके से दूर कर दिया और धमका भी दिया था कि कोई कुछ भी पूछे, तो वह कुछ न बताए. पीयूष अकेले ही हीरो बनना चाहता था.

थोड़ी ही देर में वैज्ञानिकों की टीम आ गई. इंस्पैक्टर पीयूष उन्हें घटना स्थल तक ले गया, जहां एलियन को दफनाया गया था. उस के नजदीक जाने से पहले टीम ने बचाव सूट पहन कर एलियन की तरफ बढ़ना शुरू किया. पुलिस वालों ने अपनी बंदूकें एलियन की तरफ तान दीं ताकि एलियन हमला न कर सके. एक वैज्ञानिक ने पहले एक छड़ी से एलियन के सिर को हिलाया. छड़ी लगते ही एलियन का सिर लुढ़क कर जमीन पर जा गिरा. डर के मारे वहां जमा लोग इधरउधर भागने लगे, परंतु जांच करने वाला वैज्ञानिक हैरान खड़ा रह गया. उस ने हताश हो कर अपने सिर पर पहना बचाव वाला हैलमेट उतार लिया और गुस्से से उसे इंस्पैक्टर पीयूष की ओर फेंका. वह डर से चिल्लाया और बेहोश होतेहोते बचा.

एलियन का सिर इंस्पैक्टर पीयूष से टकराया और उस ने अपना संतुलन खो दिया. उस ने उसे ध्यान से देखा तो उस का गला सूख गया. उस ने झुक कर एलियन के सिर को उठा लिया. सिर न हो कर यह

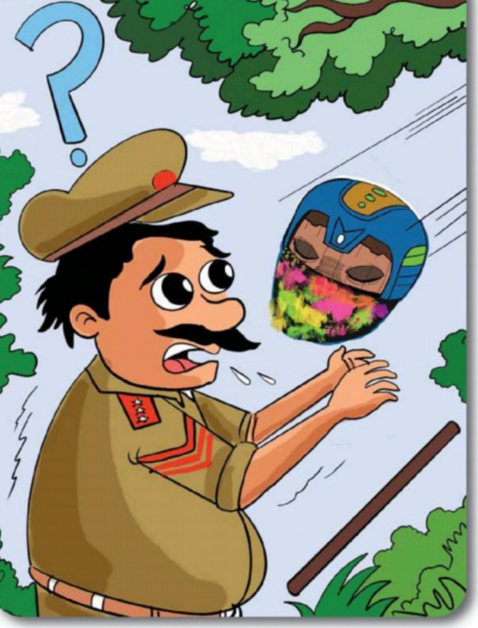

तो एक मुखौटा जैसा था, जिस के ऊपर सचमुच का एक मास्क लगा हुआ था.

इंस्पैक्टर पीयूष ने कातर निगाहों से वैज्ञानिक की ओर देखा और कहा, ''मुझे खेद है सर, श्यामा सोसायटी से श्रीमती मीना ने बताया कि यह एक एलियन था.''

देखतेदेखते यह खबर जंगल की आग की तरह फैल गई कि एक एलियन जैसा मुखौटा मिला है. थोड़ी ही देर में दो बच्चे अपने कुत्ते के साथ वहां पहुंचे. उन में से एक लड़का, जिस का नाम रवि था बोला, ''अंकल, वह मुखौटा मेरा है. हम आने वाले हैलोवीन त्योहार की तैयारी कर रहे थे. मानो मैं चीन का रहने वाला हूं , मेरी बहन भारत से होगी और यह लकड़ी का सिर कोरोना वायरस था. ''मेरी बहन ने खेलखेल में अपना मास्क निकाल कर मुखौटे को पहना दिया. मास्क पहने मुखौटे को देख कर हमारे कुत्ते बूजो को पता नहीं क्या हुआ, वह उसे मुंह में दबा कर भाग खड़ा हुआ. काफी देर बाद वह वापस लौटा, तो उस के मुंह में मुखौटा नहीं था. थैंक्यू अंकल, आप के कारण मेरा मुखौटा मुझे वापस मिल गया. क्या हम इसे अपने साथ ले जा सकते हैं?''

इंस्पैक्टर पीयूष ने दांत पीसते हुए बच्चों की तरफ देखा और मुखौटा उन की तरफ उछाल दिया. बच्चों के साथ मुखौटे को जाते हुए देख कर इंस्पैक्टर पीयूष को लग रहा था उस की चमकने वाली किस्मत भी उन के साथ जा रही है. अब इनाम के बदले डांट खाने के लिए वह मन ही मन तैयार हो रहा था, जिस की उस ने कल्पना भी नहीं की थी. ●

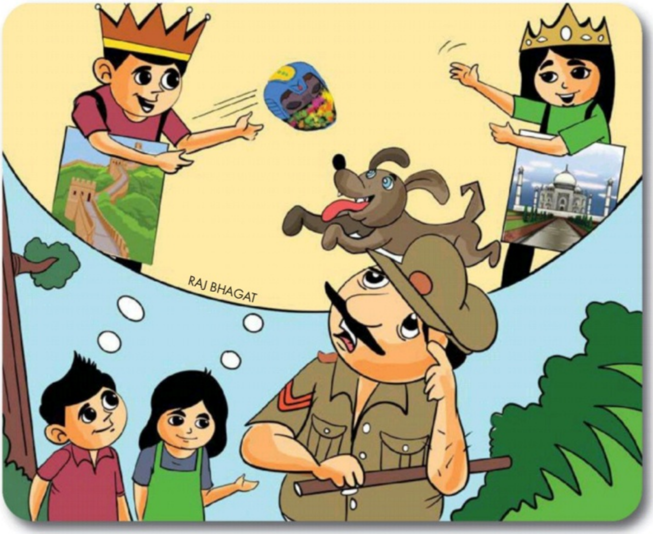

दादाजी और दशहरा

कहानी ● विवेक चक्रवर्ती

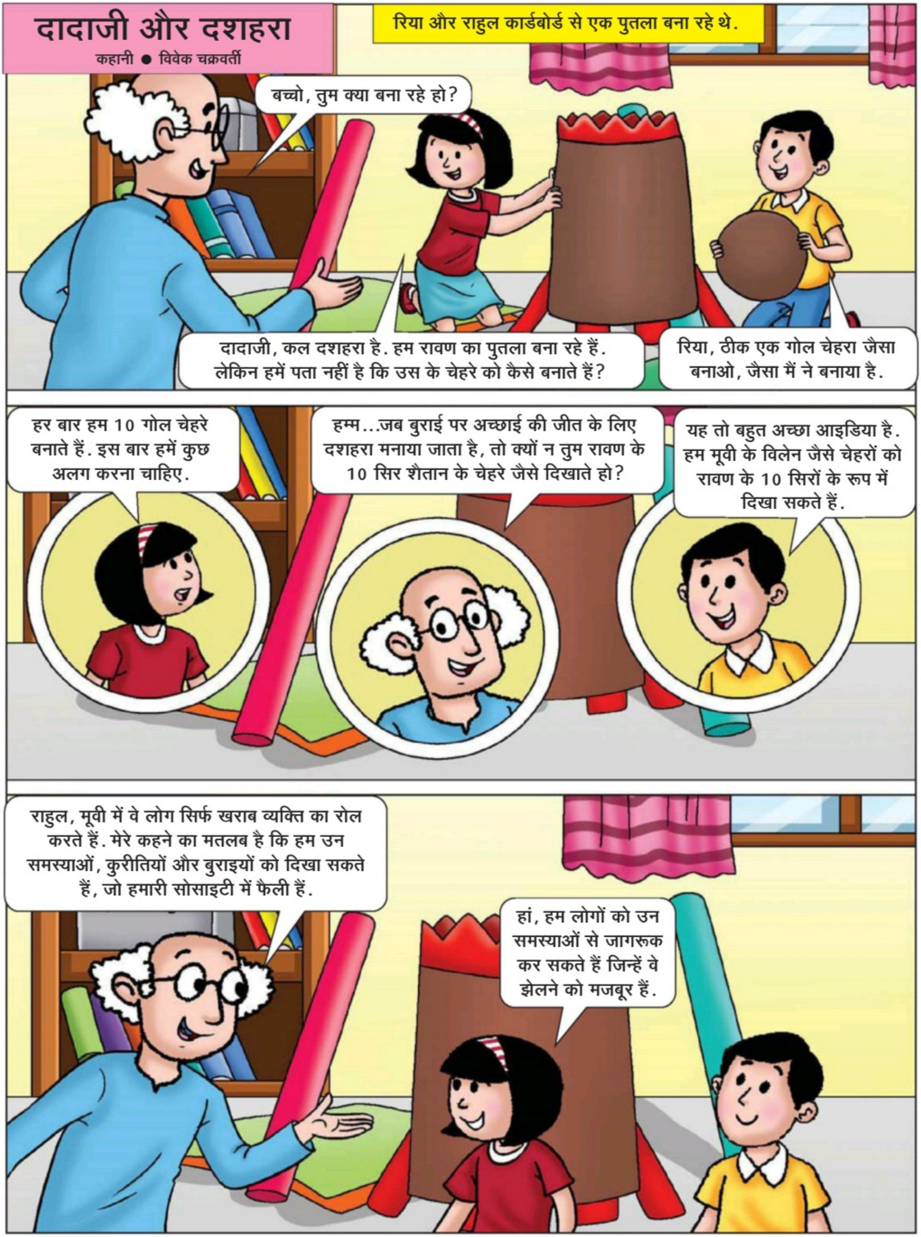
रिया और राहुल कार्डबोर्ड से एक पुतला बना रहे थे.
बच्चो, तुम क्या बना रहे हो?
दादाजी, कल दशहरा है. हम रावण का पुतला बना रहे हैं. लेकिन हमें पता नहीं है कि उस के चेहरे को कैसे बनाते हैं?
रिया, ठीक एक गोल चेहरा जैसा बनाओ, जैसा मैं ने बनाया है.
हर बार हम 10 गोल चेहरे बनाते हैं. इस बार हमें कुछ अलग करना चाहिए.
हम्म...जब बुराई पर अच्छाई की जीत के लिए दशहरा मनाया जाता है, तो क्यों न तुम रावण के 10 सिर शैतान के चेहरे जैसे दिखाते हो?
यह तो बहुत अच्छा आइडिया है. हम मूवी के विलेन जैसे चेहरों को रावण के 10 सिरों के रूप में दिखा सकते हैं.
राहुल, मूवी में वे लोग सिर्फ खराब व्यक्ति का रोल करते हैं. मेरे कहने का मतलब है कि हम उन समस्याओं, कुरीतियों और बुराइयों को दिखा सकते हैं, जो हमारी सोसाइटी में फैली हैं.
हां, हम लोगों को उन समस्याओं से जागरूक कर सकते हैं जिन्हें वे झेलने को मजबूर हैं.

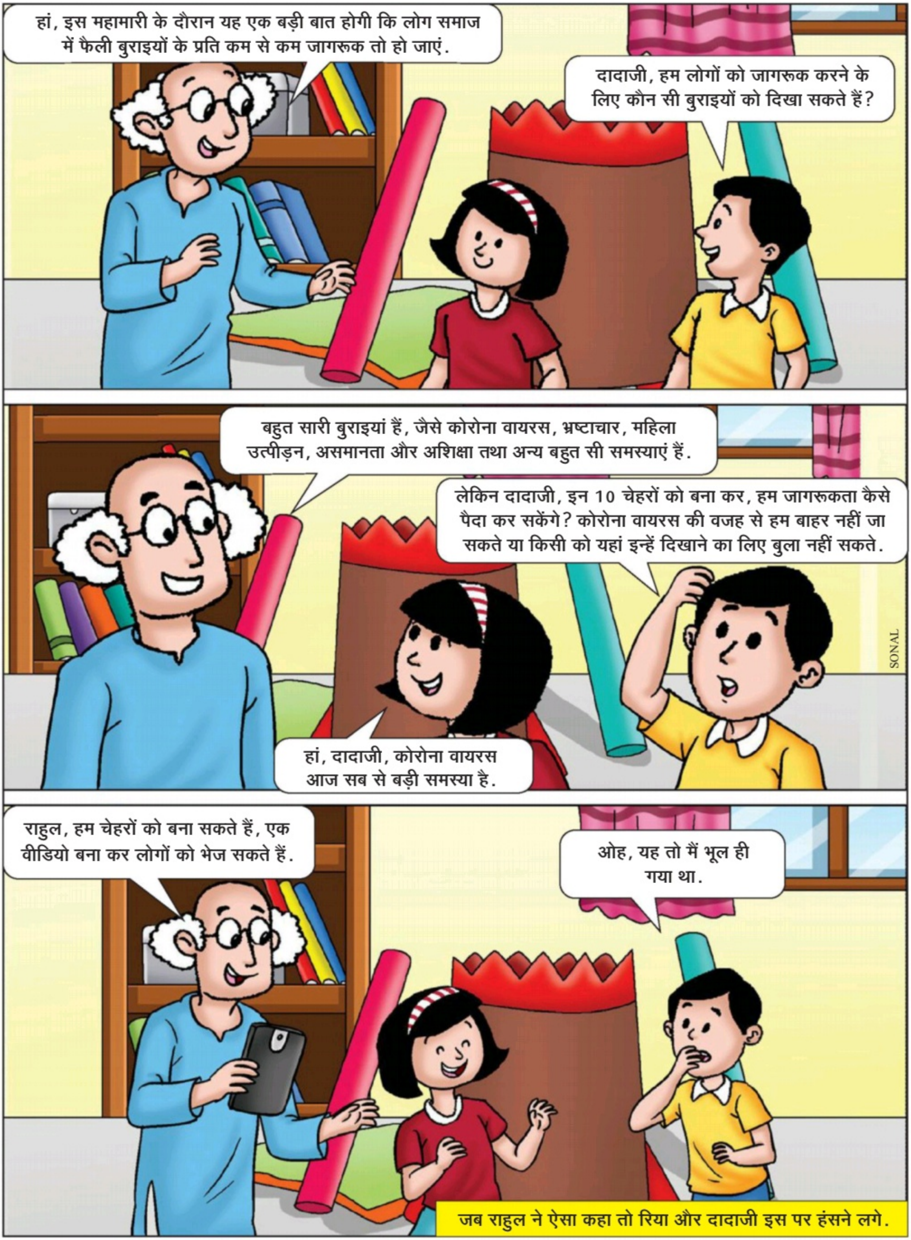
हां, इस महामारी के दौरान यह एक बड़ी बात होगी कि लोग समाज में फैली बुराइयों के प्रति कम से कम जागरूक तो हो जाएं.
दादाजी, हम लोगों को जागरूक करने के लिए कौन सी बुराइयों को दिखा सकते हैं?
बहुत सारी बुराइयां हैं, जैसे कोरोना वायरस, भ्रष्टाचार, महिला उत्पीड़न, असमानता और अशिक्षा तथा अन्य बहुत सी समस्याएं हैं.
लेकिन दादाजी, इन 10 चेहरों को बना कर, हम जागरूकता कैसे पैदा कर सकेंगे? कोरोना वायरस की वजह से हम बाहर नहीं जा सकते या किसी को यहां इन्हें दिखाने का लिए बुला नहीं सकते.
हां, दादाजी, कोरोना वायरस आज सब से बड़ी समस्या है.
SONAL
राहुल, हम चेहरों को बना सकते हैं, एक वीडियो बना कर लोगों को भेज सकते हैं.
ओह, यह तो मैं भूल ही गया था.
जब राहुल ने ऐसा कहा तो रिया और दादाजी इस पर हंसने लगे.

नन्ही कलम से

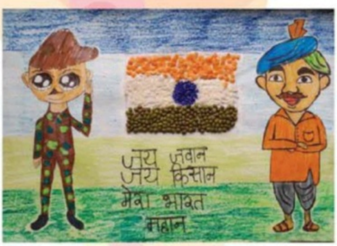

इरा लावंडे, 7 वर्ष
मुंबई

अंगरेजी भाषा

यह ऐसी भाषा है जिसे मैं खूब पसंद करती हूं. इस का प्रभाव हमेशा बना रहता है. कैसे तुक मिलाना और देखना है, कविता की नजरों से विश्व को कैसे देखना है? स्पैलिंग, मुहावरे, पदबंध सारांश ये सभी इसी भाषा में हैं. यह अक्षरों शब्दों की विशाल दुनिया है. अलगअलग अंकों का नृत्य है. विपरीत शब्द दूर करता है तो पर्यायवाची निकट लाता है. इतना ही नहीं, यहां सबकुछ ओवरडोज के कुछ भी नहीं है. व्याकरण और लैटिन भाषा के नियम हर दिन उपयोग में आते हैं, 'इन ए पिकल,' 'फौर एवर ऐंड ए डे,' मिल्क इज व्हाइट ऐंड ब्लैक इज ग्रे,' शैक्सपियर, डिकेंस, जेन आस्टिन और ऐफिल टावर सबकुछ यहां है. बिगबेन भी यहीं है. प्राइम ऐंड प्रीज्यूडिश, आस्टेरिक्स और औलिवर की ट्विस्ट इसी भाषा में है. प्यार से भरी कहानियां, पाराडाइज लौस्ट, ए हेल औफ टू सिटिज, ढेरों पाउंड्स, डालर्स और रुपए सबकुछ यहां हैं. थ्योरी और प्रैक्टिकल दोनों ही जरूरी है. दोनों ही मेरी ओर बढ़ रहे हैं. आवश्यकता ही हर खोज की जननी है. अपनी संपन्नता के मामले में अंग्रेजी भाषा को सीखने की जरूरत नहीं हैं. उत्तर, दक्षिण, पूरब और पश्चिम कहीं भी जाओ अंग्रेजी सब से बेहतर है.

अनुषा शुक्ला, 11 वर्ष, जबलपुर

विट्टी किंग लियो लायन

दो पुराने दोस्त चीकू और मीकू खरगोश ने फौरेस्ट असैंबली में प्रवेश किया. मंत्रीगण सूजी भेड़, जेराल्ड जिराफ, डैनी डौग, वैंडी भेड़िया और पैडरो गधा राजा लियो लायन के पीछे की पंक्ति में बैठे थे. राजा लियो ने चीकू और मीकू को देखा और पूछा, ''मामला क्या है?'' चीकू ने मीकू के खिलाफ 500 रुपए के मामले में एक मुकदमा दायर कराया कि उस ने यह राशि उसे उस वक्त दी. में जब मीकू ने अपना नया बिजनेस शुरू किया था और उसे रुपयों की जरूरत थी. मीकू ने एक महीने बाद रुपए लौटाने का वादा किया था लेकिन उस ने रुपए नहीं लौटाए. राजा लियो ने पूछा, ''चीकू, अपने मामले को सही साबित करने के लिए क्या तुम्हारे पास कोई सुबूत या कोई गवाह है?'' ''नहीं महाराज,'' चीकू ने कहा. वहां खामोशी छा गई. तभी अचानक मीकू बोला, ''महाराज, मैं निर्दोष हूं, चीकू मुझ पर झूठा आरोप लगा रहा है क्योंकि मेरे अमीर बनने से उसे जलन हो रही है.'' चीकू ने रोना शुरू कर दिया और विनती करते हुए कहा, ''महाराज, उस की किसी भी बात पर विश्वास मत कीजिए और उस के दिखावटी रोनेधोने पर मत जाइए वरना मैं बरबाद हो जाऊंगा.'' तब महाराजा लियो ने चीकू से कहा कि अपनी कहानी शुरू से बताओ. चीकू ने कहा, ''महाराज, मीकू मेरा पुराना दोस्त है. जब मैं ने सुना कि मीकू को रुपयों की जरूरत है तो मैं चंपक गांव में सेजू नदी के किनारे स्थित एक आम के पेड़ के पास उस से मिला और उसे 500 रुपए दिए. मीकू ने वादा किया था कि एक महीने बाद वह मुझे लौटा देगा लेकिन उस ने नहीं लौटाए.'' मीकू ने तर्क देना शुरू किया, ''झूठ बोल रहा है, महाराज, मैं ऐसे किसी भी आम के पेड़ के बारे में नहीं जानता हूं.'' महाराज लियो चीकू से बोले, ''उस पेड़ के पास जाओ और उसे इस अदालत में ले आओ,'' चीकू तुरंत पेड़ की ओर भागा और राजा अन्य मुकदमों को सुनने में लग गए. कुछ देर बाद राजा ने मीकू से पूछा कि चीकू पेड़ के पास पहुंच गया होगा कि नहीं? मीकू ने जवाब दिया, ''नहीं, वह पहुंचने वाला होगा.'' चीकू पेड़ के पास पहुंचा और उस ने विनती की. चलो और महाराजा लियो के सामने बयान दो. पेड़ ने कोई जवाब नहीं दिया. चीकू उदास हो कर राजा के पास लौट आया. चीकू ने कहा, ''महाराज, पेड़ ने मेरे साथ आने से मना कर दिया.'' राजा ने कहा, ''क्या? पेड़ तो पहले ही आ चुका था, उस ने बयान दिया और जब तुम दूर थे तभी वह लौट गया.'' चीकू और मीकू दोनों यह सुन कर भौचक्क रह गए. मीकू ने कहा, ''मैं यहां काफी देर से बैठा हूं, लेकिन पेड़ नहीं आया.'' राजा लियो ने कहा, ''मीकू, सब से पहले तुम ने कहा था कि तुम किसी पेड़ के बारे में नहीं जानते हो. लेकिन जब मैं ने तुम से चीकू की लोकेशन के बारे में पूछा तो तुम ने इस का अंदाजा लगा लिया जिस से पता चलता है कि तुम उस पेड़ के जानने के बारे में झूठ बोल रहे हो.'' मीकू दोषी था, उस ने अपनी गलती मानी और एक सप्ताह के अंदर जुर्माने के साथ उसे चीकू को रुपए लौटाने पड़े. वह अपने किए पर शर्मिंदा था और उस ने इस के लिए क्षमा मांगी. चीकू ने उसे माफ कर दिया और गले लगा लिया. असैंबली में मौजूद हर किसी ने राजा लियो की बुद्धिमानी और चतुराई की प्रशंसा तहे दिल से की.

रूही मोहसिन, 12 वर्ष
देहरादून

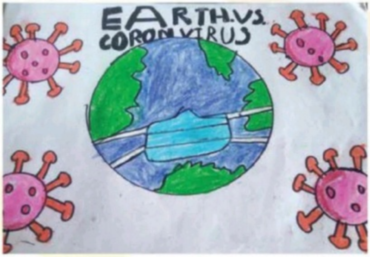

इशान कुमार, 8 वर्ष
गाजियाबाद

हाथ धोने के तरीके

ऊपर और नीचे गोलगोल घुमा कर हाथ धोओगे तो एक भी कीटाणु नहीं रहेगा. साबुन लगा कर मेरी तरह साफ पानी से अगर आप भी अपने हाथ धोएं तो बन जाओगे मेरी तरह सब से स्वस्थ गोन्ना डाक्टर. इसलिए अपने हाथ धोओ, खूब धोओ, कीटाणुओं को मारो और पहनो एक बैंड. क्योंकि यही एक तरीका है अपने हाथ धोने का, रेत और गंदगी से दूर रहने का, खुद को स्वस्थ बनाओ और कीटाणुओं को मार भगाओ.

अद्विका संतोष उपाध्याय, 10 वर्ष
मुजफ्फरपुर

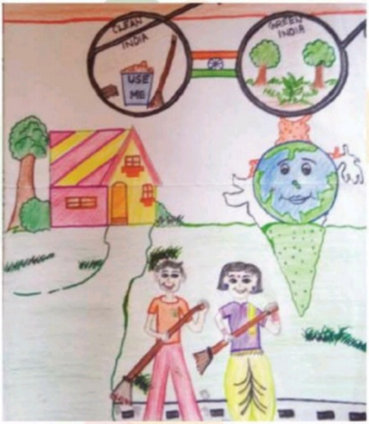

वैष्णवी एस., 12 वर्ष
मैंगलुरु

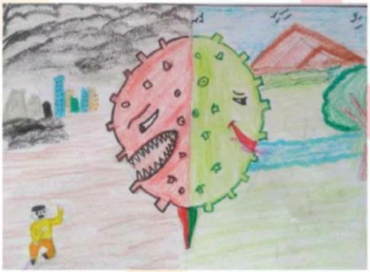

दिव्यांशी एल. नाइक, 10 वर्ष
मुंबई

फूल

फूल ही प्रकृति है. फूल की रचना ही कुदरत है. फूलों की सुगंध इतनी मनमोहक है कि क्या कहा जाए. खास कर गुलाब के फूलों की सुगंध को हर कोई जानता है. विश्व में फूल ही एक ऐसी चीज है जो सब से खूबसूरत और बेहतरीन है. लेकिन इन में से कुछ ही गुलाब ऐसे हैं जो घुंघराले यानी कुंडल जैसे होते हैं.

जहेरा फातिमा शाहनवाज मर्चेंट, 12 वर्ष
भावनगर

यह एक घड़ी है. जिसे हमारी 8 वर्षीय पाठिका साशा सत्यजीत राणे ने मुंबई से बना कर भेजा है.

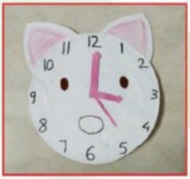

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:

चंपक, दिल्ली प्रैस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई- 400031

writetochampak@delhipress.in 9619587613

www.facebook.com/ChampakMagazine

http://www.youtube.com/ChampakSciQ

हम आप की सामग्री लौटा नहीं सकते इसलिए हमें भेजी सामग्री की कापी अपने पास रखें.

अंतर बताओ

यहां 10 गलतियां हैं. आप उन गलतियों को ढूंढ़ कर बताएं.

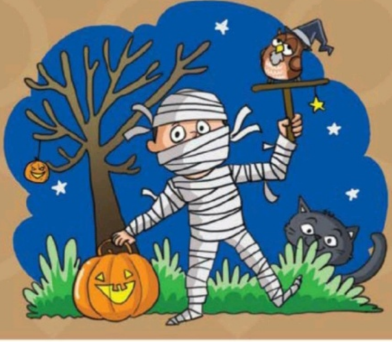

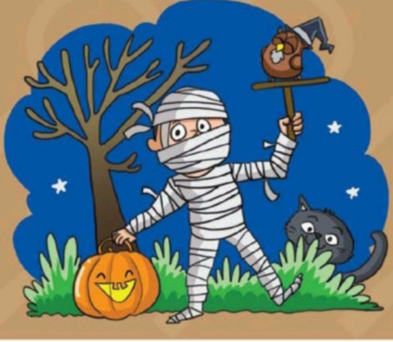

हमारे और उन के फिंगरप्रिंट्स

औरंगउटान और चिंपैंजी ऐसे जानवर हैं जो मनुष्य के काफी निकट संबंधी हैं. कहने का मतलब इन के बहुत से शारीरिक और व्यावहारिक लक्षण मनुष्यों जैसे ही प्रतीत होते हैं. कोआला के लक्षण भी हमारे जैसे ही होते हैं. हमारी ही तरह इन के भी फिंगरप्रिंट्स होते हैं.

फिंगरप्रिंट्स कस कर पकड़ने में मददगार हैं. यह हमें खुरदरी सतह को पकड़ने में सहायता करते हैं. फिंगरप्रिंट्स हमारे स्पर्श की संवेदना को बढ़ाते हैं और हमें संरचना को महसूस कराते हैं. उस वस्तु के आकार को जिसे हम पकड़ते हैं, एहसास होने देता है. कोआला सिर्फ इन्हीं सब उद्देश्यों के लिए अपने फिंगरप्रिंट्स का इस्तेमाल नहीं करते हैं, बल्कि अन्य बातों के लिए भी करते हैं. वे चुग कर खाने वाले जीव हैं. यूकेलिप्टस की पत्तियों को खाने को प्राथमिकता देते हैं. खाने से पहले अच्छी तरह जांचपड़ताल करने में उन के फिंगरप्रिंट्स उन की मदद करते हैं.

कोआला यूकेलिप्टस के पेड़ की सीधी खड़ी छोटी शाखा पर हाथ फैला कर मुट्ठी भर कर पत्तों को पकड़ते हैं और मुंह में ला कर खाते हैं. ऐसा तब होता है जब वे अपनी उंगलियों का इस्तेमाल भोजन के विश्लेषण में कर चुके होते हैं. इतना ही नहीं, फिंगरप्रिंट्स वस्तु को आसानी से पकड़ने में भी उन की सहायता करते हैं.

यूकेलिप्टस जानवरों के लिए जहरीला होता है. फिर भी कोआला यूकेलिप्टस की पत्तियों की डाइट यानी भोजन पर ही जीवित हैं और एक दिन में ये एक किलोग्राम पत्तियां तक खा सकते हैं.

गलत को बताएं

इस चित्र में कुछ बातें ऐसी हैं जो सही नहीं हैं, उन्हें ढूंढ़ें.

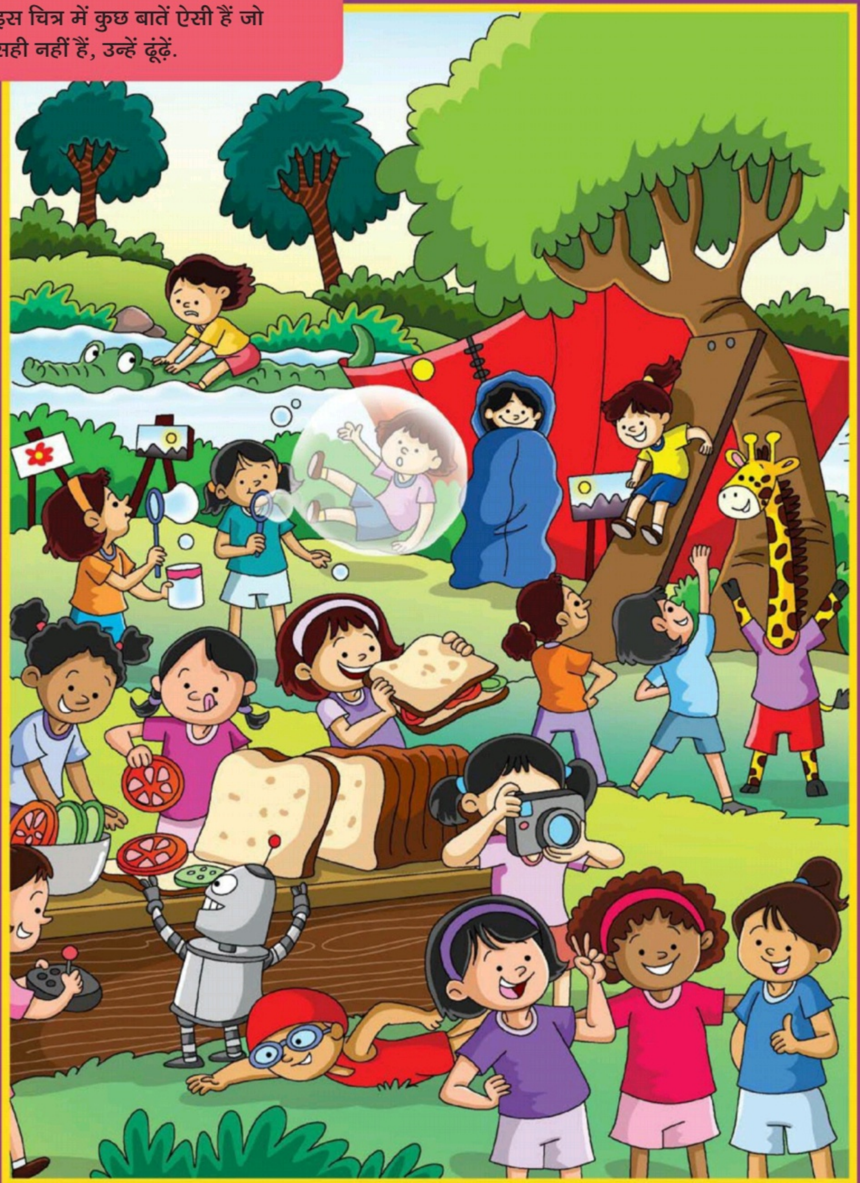

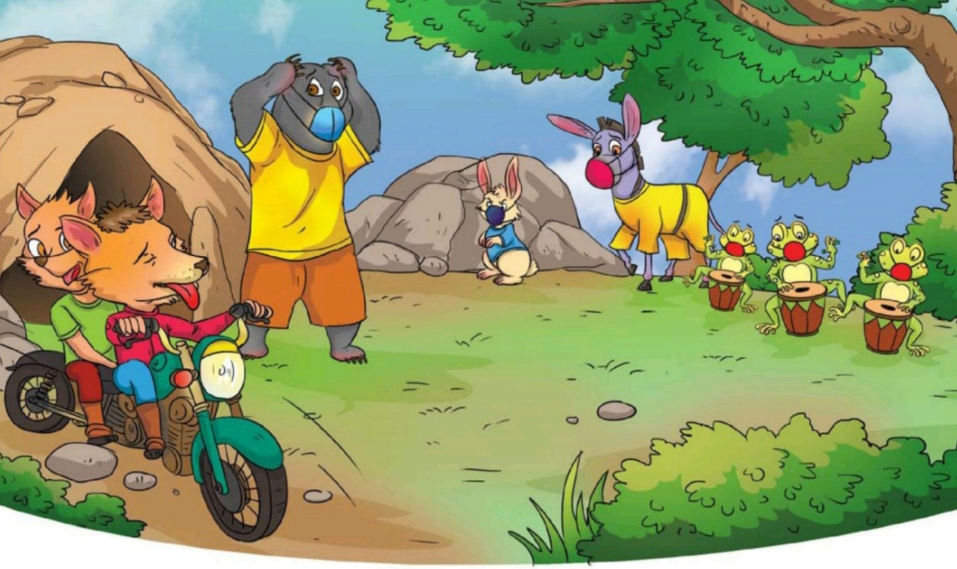

लगी अकल ठिकाने

कहानी ● डा. अमिताभ शंकर राय चौधरी

पिछले दो सप्ताह से मेंढक, खरगोश और गधा सार्वजनिक रूप से जोर से चिल्ला कर घोषणा कर रहे थे. ''सुनो, सुनो, वनवासी भाइयो और बहनो, जरा ध्यान से सुनो. सारे जंगल में कोरोना वायरस महामारी फैली हुई है. आप लोग बिना वजह अपने घरों से बाहर न निकलें, जब जरूरी हो तभी बाहर निकलें. घर से बाहर निकलते समय चेहरे पर मास्क जरूर लगाएं और बारबार अपने हाथ साबुन से धोएं.''

घोषणा सुनते हुए रिची भालू नीले रंग के कपड़े का मुखौटा लगाए अपनी गुफा से बाहर निकल आया. उस ने देखा, दूर पेड़ के नीचे रोबी खरगोश मास्क लगा कर अपने बिल के पास खड़ा था. रिची ने कहा, ''रोबी देखो, मनुष्य यहां अपनी कार में बैठ कर घूमने आते हैं और बचा हुआ खाना तथा प्लास्टिक की बोतल वगैरा यहां फेंक देते हैं. उन्हीं से जंगल में यह कोरोना वायरस फैला है.''

''हम उन के गैरजिम्मेदाराना व्यवहार से लाचार हैं, वे असली अपराधी हैं. इस महामारी को उन्हीं लोगों ने यहां फैलाया है,'' रोबी ने दूर से ही जवाब दिया.

रिची कुछ कह पाता इतने में उस ने देखा बिना मास्क लगाए फ्रैडी और रौक्सी लोमड़ फर्राटे से बाइक चलाते हुए चले आ रहे थे और गा रहे थेः

''हम वही करेंगे, जो हमें पसंद है,
हम अपने मुंह को नहीं ढकेंगे.

करें जिसे जो कुछ है करना,
नहीं किसी से हम को डरना.''

उन्होंने बाइक का साइलैंसर भी निकाल दिया था. जिस से सारे जंगल में भयंकर शोर हो रहा था.

रोबी ने अपना चश्मा उतार लिया और एक लंबी सांस छोड़ कर थूथन हिलाते हुए कहा, ''देखा, रिची, इन जानवरों की वजह से तो हम सभी पशुपक्षी मुसीबत में हैं.''

आम के पेड़ पर बैठे तोते ने कहा, ''मुझे देखो, हमें अमरूद वगैरा चुगने में कितनी दिक्कत होती है. फिर भी हम चेहरे पर मास्क लगा कर ही अपने घोंसले से निकलते हैं. मगर ये हीरो हैं कि सारे नियमों को ठेंगा दिखाने में ही अपनी शान समझते हैं.''

पेड़ के तने पर चोंच मारते हुए कठफोड़वे ने भी हामी भरी, ''मुझे देखो, मैं ने पेड़ों पर चोंच मारने के लिए मास्क के भीतर छेद बना रखा है. फिर उड़ते समय मैं चोंच को बाहर कर लेता हूं, ताकि कहीं से इंफैक्शन न हो जाए. लेकिन इन दोनों को देखो, अपनी परवा नहीं करते हैं और न दूसरों की सुरक्षा.''

थोड़ी देर में शोर मचाते हुए वह दोनों बाइक पर घूम रहे थे. रास्ते में इन को देख कर वे रुक गए. ''अरे अंकल, क्या बुड्ढों की तरह मुंह लटका कर खड़े हो? जाओ, थोड़ा मस्ती कर लो. हमें देखो, हम तालाब में गए और नहाधो कर वापस आ गए. हिम्मत है तो जाओ तुम भी मस्ती कर लो,'' फ्रैडी ने मुसकराते हुए कहा.

''अरे फ्रैडी, जाओ, अपना बदन तो पोंछ लो,'' रिची ने उसे समझाने का प्रयास किया.

''अरे अंकल, बाइक रेस कर के ही हम पानी सुखा लेंगे.''

दोनों गाते हुए हवा हो गए,

''बुरी किस्मत वाले लोगो,
देखो कोरोना चला गया है.''

रिची और रोबी निराश हो कर अपने घर लौट गए.

अगले दिन सुबह बौबी लोमड़ रिची के घर आ कर उस का दरवाजा पीटने लगा.

''क्या बात है?'' रिची ने दरवाजा खोलते हुए पूछा.

''रिची, कृपया फ्रैडी को बचा लो, कल रात से उसे तेज बुखार है. कहीं यह कोरोना तो नहीं है?''

''तुम्हें कैसे मालूम कि उस को कोरोना हो गया है? क्या डाक्टर ने कहा है? कल तो वह गीले कपड़ों में घूम रहा था.''

''इसीलिए तो मैं तुम्हारे पास दौड़ा आया हूं.

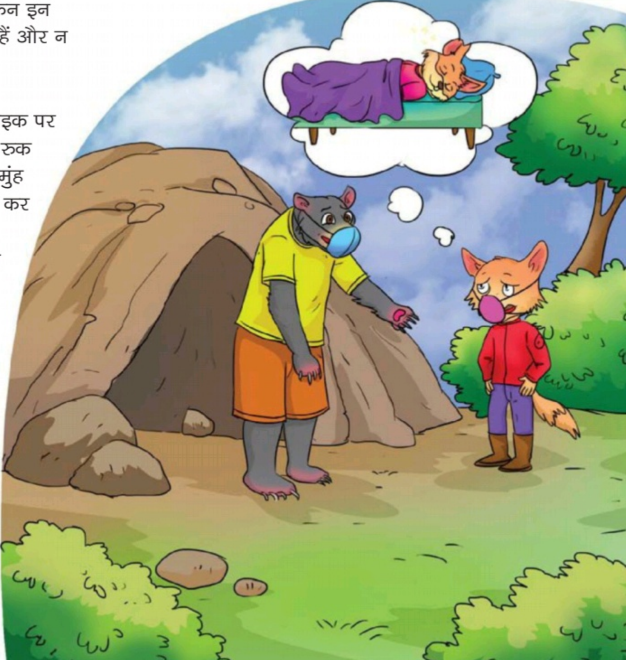

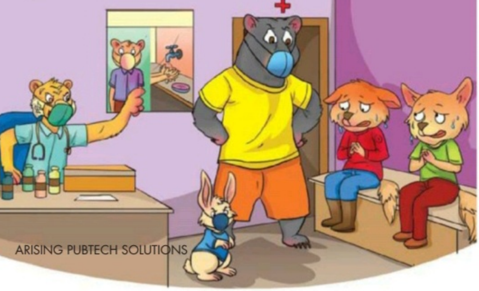

ARISING PUBTECH SOLUTIONS

हमें उसे डाक्टर के पास ले चलना होगा.''

''देखो बौबी, हमें अपने बीच कम से कम 6 फीट की दूरी बना कर रखनी चाहिए.''

''फ्रैडी को ले कर डा. रोबी बाघ के पास चलो. हम भी वहां पहुंच रहे हैं.''

जब रिची और टोटो डा. टोटो के क्लिनिक पर पहुंचे तो उन्होंने फ्रैडी और रौक्सी को वहां बैठे देखा. उन्हें देखते ही दोनों रोंआसे हो गए, ''अंकल, कहीं हमें कोरोना तो नहीं हो गया है?''

डा. टोटो नाराज हो गए और बोले, ''आप क्यों सोचते हैं कि इस दौरान बाहर जाना ठीक है. इस तरह खिलवाड़ करोगे और फिर पूछोगे कि कोरोना हुआ है कि नहीं? जाओ, यह दवा लो, गरम काढ़ा पिओ, सब ठीक हो जाएगा, अगर जरूरत पड़ी तभी मैं कोरोना की जांच लिखूंगा.''

जब वह उन को ले कर चलने लगा तो डा. टोटो ने सख्ती से कहा, ''अब आगे से चेहरे पर मास्क लगा कर ही घर से बाहर निकलना. बारबार साबुन से हाथ धोना. चुपचाप घर पर ही बैठे रहें, इधरउधर बिना वजह न जाएं, समझे कि नहीं.''

दोनों मुंह लटका कर अपने घर चले गए.

रिची और रोबी ने एकदूसरे से मुसकराते हुए कहा, ''चलो भाई, इसी को तो कहते हैं, अकल ठिकाने लगना.'' ●

उत्तर पृष्ठ :

पृष्ठ 9 : दशहरे की मस्ती :

दिन - 1 - औरेंज
दिन - 2 - सफेद
दिन - 3 - लाल
दिन - 4 - रोयल ब्लू
दिन - 5 - पीला
दिन - 6 - हरा
दिन - 7 - भूरा
दिन - 8 - पर्पल
दिन - 9 - पीकौकग्रीन

पृष्ठ 21 : छिपे चित्र ढूंढ़ें :

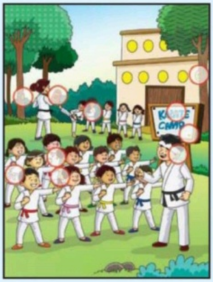

पृष्ठ 30 : हैलोवीन डे :

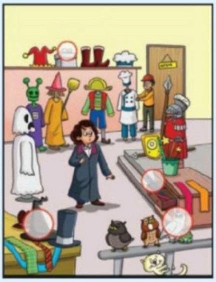

पृष्ठ 38 : वर्ल्ड थ्रिफ्ट डे :

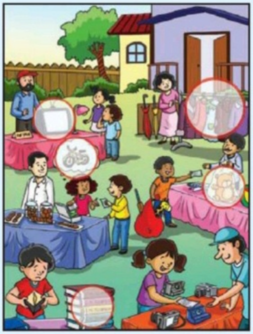

WE SPEAK IN 30 DIFFERENT CONSUMER VOICES.

BECAUSE EVERY BRAND IS UNIQUE.

With virtually every age group, income segment and language covering 30 million Indians, we are the most diverse magazine group in India. So next time you want to address anyone in India, you are better off speaking to the **Delhi Press** Group today.

DELHI PRESS

To subscribe to our magazines Call/SMS/WhatsApp: 08588843408,
E-mail: subscription@delhipress.in, You can also subscribe online at www.delhipress.in/subscribe

THE CARAVAN CHAMPAK सरिता गृहशोभा चंपक मुक्ता सरस सलिल फार्म फूड सत्यकथा मनोहर कहानियां
ગૃહશોભા ચંપક सरस सलिल गृहशोभिका চম্পক सरस सलिलु গৃহশোভা க்ருஹஷோபா சம்பக் சரிதா గృహశోభ ಚಂಪಕ
ಗೃಹಶೋಭಾ ഗൃഹശോഭ ചംപക് సలిల చంపక్ Highlights CHAMPS Highlights Genies MOTORING

(REGISTERED) RNI 16420/68 DL(C)-14/1093/2018-20 WPP U(C)148/40/2018-20
P.O. SRT Nagar, ND-55 Posting Dt. 16 to 22 Published on 12/10/2020. Pgs. 52.

SUNCARE

A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

कोविड-19
से सुरक्षित रहें,
जब भी बाहर निकलें
मास्क लगाकर निकलें,
सावधानी में ही
बचाव है,

SUNCARE
COVISAFE
Rinse-Free & Non-Sticky
Antiseptic Hand Sanitizer Gel
Kills 99.9% germs without water
Contains alcohol 72.34 %v/v

हाथ साफ तो आप संक्रमण से सुरक्षित

COVISAFE

Antiseptic Hand Sanitiser Gel

- फार्मा ग्रेड सैनिटाइजर
- लुभावनी खुशबू
- हाथों की नमी बनाए रखे
- चिपचिपाहट रहित
- शीशे की तरह पारदर्शी

हेमोकॉल*

शहद सा गाढ़ा... संतरे सा स्वादिष्ट

SUNCARE
हेमोकॉल
आयरन टॉनीक
फोलिक ऐसीड
के साथ
ग्लूकोज
से लबालब
आयरन टॉनिक
300 ml

आयरन एवं
फोलिक ऐसिड की कमी
दूर कर खून बढ़ाए

स्टोमाफिट®

टैबलेट व लिक्विड

**रखे स्टमक फिट...
पेट फिट...आप फिट**

अपच
गैस
ऐसिडिटी
से छुटकारा

SUNCARE
ANTACID LIQUID WITH BISMUTH & BELLADONNA
STOMAFIT
LIQUID
200 ml
BISMUTH TABLETS
STOMAFIT
CHEWABLE

फायदा पहली खुराक से ही
2 चम्मच/2 टैबलेट दिन में 3 बार खाने के बाद
आधा कप पानी के साथ 4 हफ्तो तक

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :
सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.
फोन : 8447977889 / 999, 011-46108735, मेल : info@stomafit.com

फ्री होम डिलीवरी ☎ 84479 77999

Now
Available on
1mg